Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24
website- www.dvpnews.in
रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

# दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 159 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 12 दिसम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

**सुविचार**

जो भीतर से जुड़ा है वह धर्म से जुड़ा है।
are, who is attached to inner-self, is also attached to religion.
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

## मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक, लिए गए अनेक महत्वपूर्ण निर्णय

**रायपुर ( विश्व परिवार )।** मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में आज यहां मंत्रालय महानदी भवन में आयोजित कैबिनेट की बैठक में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए-

मंत्रिपरिषद द्वारा द्वितीय अनुपूरक अनुमान वर्ष 2024-2025 का विधानसभा में उपस्थापन के लिए छत्तीसगढ़ विनियोग विधेयक, 2024 के प्रारूप का अनुमोदन किया गया।

मंत्रिपरिषद ने प्रदेश के अनुसूचित जनजाति वर्ग के युवाओं के छत्तीसगढ़ पुलिस में भर्ती के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए उम्मीदवारों के लिए ऊंचाई और सीना के निर्धारित मापदण्ड में एक बार के लिए छूट प्रदान करने का निर्णय लिया। जिसके तहत छत्तीसगढ़ पुलिस में सूबेदार, उपनिरीक्षक संवर्ग, प्लाटून कमाण्डर की सीधी भर्ती प्रक्रिया वर्ष 2024 में निर्धारित न्यूनतम ऊंचाई 163 सेंटीमीटर तथा सीना बिना फुलाये 78 से.मी. एवं फुलाने पर 83 से.मी. केवल अनुसूचित जनजाति वर्ग के पुरूष अभ्यर्थियों के लिए केवल एक बार के लिए छूट देने का निर्णय लिया गया है।

छत्तीसगढ़ विधानसभा सदस्य वेतन, भत्ता तथा पेंशन (संशोधन) विधेयक, 2024 के प्रारूप का अनुमोदन किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य में डेयरी उद्यमिता को प्रोत्साहन देने एवं दुग्ध संकलन तथा प्रसंस्करण में वृद्धि हेतु राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के साथ एम.ओ.यू. करने का निर्णय लिया गया। इससे नवीन तकनीक के उपयोग के साथ ही दुग्ध महासंघ के प्रसंस्करण क्षमता में वृद्धि होगी। अनुसूचित क्षेत्रों में दुधारू पशु उत्प्रेरण से स्वरोजगार में वृद्धि के साथ ही दुग्ध उत्पादन की लागत कम होगी तथा दुग्ध उत्पादकता में वृद्धि के साथ ही प्रदेश के दुग्ध उत्पादक कृषकों के दुग्ध विक्रय के लिए सुदृढ़ व्यवस्था स्थापित हो सकेगी। छत्तीसगढ़ भू-राजस्व संहिता, 1959 में संशोधन बाबत् छत्तीसगढ़ भू-राजस्व संहिता (संशोधन) विधेयक, 2024 के प्रारूप का अनुमोदन किया गया। छत्तीसगढ़ अनधिकृत विकास का नियमितिकरण (संशोधन) विधेयक, 2024 के प्रारूप का अनुमोदन किया गया। राजधानी रायपुर में 15 जनवरी से 15 फरवरी 2025 तक आयोजित ऑटो एक्सपो के दौरान वाहनों के लाईफ टाईम रोड टैक्स पर एकमुश्त 50 प्रतिशत की छूट दिए जाने का निर्णय लिया गया तथा प्रदेश के सभी डीलरों को इस सुविधा का लाभ वाहन क्रेताओं को दिलाने के निर्देश दिए गए हैं।

छत्तीसगढ़ में खेलों के लिए सुदृढ़ वातावरण तैयार करने, खेल संस्कृति को बढ़ावा देने तथा राज्य के खिलाड़ियों के लिए सुदूर ग्रामीण अंचलों से लेकर जिला मुख्यालय में खेल हेतु आधारभूत संरचनाओं के निर्माण के लिए मंत्रिपरिषद की बैठक में छत्तीसगढ़ क्रीड़ा प्रोत्साहन योजना के क्रियान्वयन के लिए कार्ययोजना का अनुमोदन किया गया।

इसके तहत छत्तीसगढ़ में खेल क्लब को बढ़ावा देने, खिलाड़ियों को प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए संबंधित पंजीकृत समितियों को खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करने पर आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाएगा। छत्तीसगढ़ पारंपरिक खेलों को पुनर्जीवित किया जाएगा। ओलम्पिक खेलों को ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में बढ़ावा देने के साथ ही राज्य के खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने पर उनको शत-प्रतिशत यात्रा व्यय तथा खेल उपकरण की सुविधा देकर प्रोत्साहित किया जाएगा। खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर उपार्जित अतिशेष (सरप्लस) धान के निराकरण के संबंध में गहन विचार-विमर्श किया गया। कैबिनेट ने खरीफ सीजन में उपार्जित शतप्रतिशत धान की कस्टम मिलिंग उसी खरीफ सीजन में पूरा कर जमा कराने तथा इस साल के अतिशेष धान का चावल केन्द्रीय पूल के अंतर्गत भारतीय खाद्य निगम में सितम्बर 2025 तक उपार्जित किए जाने के लिए लक्ष्य वृद्धि हेतु प्रस्ताव धान खरीदी समाप्त होते ही भारत सरकार को पुनः भेजे जाने के संबंध में चर्चा की गई तथा अतिशेष धान का निराकरण नीलामी से करने की अनुमति दी गई है। खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में कस्टम मिलिंग हेतु फोर्टिफाईड राईस कर्नेल की व्यवस्था के संबंध में फोर्टिफाईड चावल जमा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ द्वारा हृद्गरू के माध्यम से दर का निर्धारण पश्चात् आपूर्ति प्रारंभ होने तक गत् खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 अनुसार मिलरों द्वारा एफआरके निर्माताओं से भारत सरकार द्वारा निर्धारित दर के अधीन फोर्टिफाईड राईस कर्नेल (स्नक्र्य) क्रय कर फोर्टिफाईड चावल जमा किये जाने की अनुमति दी गई है। खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर उपार्जित धान की कस्टम मिलिंग प्रोत्साहन राशि 80 रूपए करने का निर्णय लिया। खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में राईस मिलों को लंबित प्रोत्साहन राशि की प्रथम किश्त प्रदान किए जाने का निर्णय लिया गया।

छत्तीसगढ़ पंचायत राज अधिनियम 1993 (क्रमांक 1 सन् 1994) की धाराओं में संशोधन संबंधी छत्तीसगढ़ पंचायत राज (संशोधन) विधेयक, 2024 के प्रारूप का अनुमोदन किया गया। छत्तीसगढ़ नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 (संशोधन) विधेयक 2024 के प्रारूप का अनुमोदन किया गया। छत्तीसगढ़ नगर पालिक अधिनियम 1961 (संशोधन) विधेयक 2024 के प्रारूप का अनुमोदन किया गया।

## आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए अधिक पहुंच और सुविधा सुनिश्चित करने तथा अनारक्षित यात्री यात्रा को बढ़ावा देने हेतु 12,000 सामान्य कोच : अश्विनी वैष्णव

### महाकुंभ के लिए रेलवे ने तीर्थयात्रियों की यात्रा को सुगम और प्रभावी बनाने हेतु 13,000 विशेष ट्रेनों की योजना बनाई : रेल मंत्री

**नई दिल्ली ( पीआईबी )।** रेल, सूचना एवं प्रसारण, और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने आज लोकसभा को संबोधित किया। संसद सदस्यों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए, श्री वैष्णव ने भारतीय रेलवे की कई महत्वपूर्ण पहल और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। विभिन्न विषयों पर बात करते हुए, मंत्री ने यात्री सुविधा बढ़ाने, संचालन दक्षता सुधारने, सुरक्षा सुनिश्चित करने और भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के प्रयासों का विवरण दिया। बुनियादी ढांचा विकास से लेकर नवाचारी ट्रेन सेवाओं तक, मंत्री ने राष्ट्र की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रति रेलवे की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

संसद में बोलते हुए, रेल मंत्री ने आर्थिक रूप से कमजोर और अन्य वर्गों पर संतुलित ध्यान देने पर जोर दिया, गैर-एसी कोच के लिए 2:3 और एसी कोच के लिए 1:3 का अनुपात बनाए रखते हुए। सामान्य कोच की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए, एक विशेष निर्माण



कार्यक्रम शुरू किया गया है, जिसका लक्ष्य 12,000 सामान्य कोच का निर्माण करना है। इसमें से, इस वित्तीय वर्ष में 900 कोच पहले ही जोड़े जा चुके हैं, और 10,000 और बनाने का लक्ष्य है, जिससे बिना आरक्षित श्रेणी के यात्रियों को सुविधा सुनिश्चित हो सके। इसी कड़ी में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की सभी 16 मेल एक्सप्रेस ट्रेनों में 4 सामान्य श्रेणी के कोच की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

सांसद के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, रेल मंत्री ने आगामी महाकुंभ की विस्तृत तैयारियों का विवरण दिया। यात्रियों की अपेक्षित वृद्धि को पूरा करने के लिए कुल 13,000 ट्रेनों की योजना बनाई गई है, जो मध्यम और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को सेवा प्रदान करने पर केंद्रित है। मंत्री ने छठ और दिवाली त्योहारों के दौरान रेलवे की संचालन दक्षता पर प्रकाश डाला। इन समयों के दौरान, लगभग 7,900 विशेष ट्रेनों ने 1 करोड़ 80 लाख से अधिक यात्रियों को प्रमुख असुविधाओं के बिना परिवहन किया, जो पीक यात्रा सीजन में यात्री सुविधा के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

एक प्रश्न के उत्तर में, मंत्री ने बताया कि पूरी तरह गैर-एसी यात्रियों के लिए डिज़ाइन की गई अमृत भारत ट्रेन सीरीज़ का परिचय दिया गया है। वंदे भारत ट्रेनों के समान अत्याधुनिक तकनीक से लैस, ये ट्रेनें शोर और झटकों से मुक्त यात्रा अनुभव प्रदान करती हैं। दस महीनों के सफल संचालन के बाद, 50 अतिरिक्त अमृत भारत ट्रेनों का उत्पादन करने की योजना बनाई जा रही है। मंत्री ने नमो भारत ट्रेन पहल पर भी प्रकाश डाला, जो छोटे शहरों की जोड़ी के लिए उच्च-आवृत्ति शटल सेवाओं के लिए डिज़ाइन की गई है। दो नमो भारत ट्रेनें पहले से ही चालू हैं, और प्रदर्शन मूल्यांकन के बाद, बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया जाएगा।

## मुख्यमंत्री साय ने पखांजूर में 254 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का किया लोकार्पण एवं भूमिपूजन

- बस्तर अंचल में अब बह रही है विकास की बयार : विष्णुदेव साय
- पखांजूर-मायापुर सड़क, खेल परिसर, नालंदा परिसर लाइब्रेरी निर्माण की घोषणा
- स्वर्गीय श्री असीम रॉय की प्रतिमा का किया अनावरण



**रायपुर ( विश्व परिवार )।** प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज कांकेर जिले के पखांजूर में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार सभी वर्गों की भलाई और उन्नति के लिए कार्य कर रही है। बस्तर अंचल के विकास के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नियद नेल्ला नार जैसी योजनाओं से बस्तर में रहने वाले लोगों को केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं के साथ-साथ सड़क, स्कूल, पेयजल, आवास, बिजली जैसी मूलभूत सुविधाएं आसानी मिल रही है। अब बस्तर में विकास की बयार बह रही है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कार्यक्रम में पखांजूर से मायापुर सड़क सुदृढ़ीकरण के लिए 8.78 करोड़ रुपए, खेल परिसर निर्माण के लिए 02 करोड़, सिविल अस्पताल के मरम्मत कार्य के लिए 30 लाख रूपए और नालंदा परिसर लाइब्रेरी निर्माण की घोषणा की। उन्होंने नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष श्री असीम रॉय की प्रतिमा का अनावरण किया।

## राष्ट्रीय स्तर पर भव्य आयोजन : 'कौशिकी 2024'



**राजनांदगांव (विश्व परिवार)।** राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 'कौशिकी 2024' अपनी भव्यता और विशिष्टता के लिए चर्चा का केंद्र बना। इस कार्यक्रम का आयोजन भरतनाट्यम नृत्य शिरोमणी खुशी जैन और कत्थक सिंगरमणि डॉ. चंदन सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अंतिम सत्र में अतिथि के रूप में डॉ संध्या मदन मोहन (प्राचार्या भिलाई महिला महाविद्यालय), डॉ. मानसी गुलाटी, (अहिंसा जागरुक संघ के राष्ट्रीय संयोजक) श्री पवन जैन प्रेमी, श्री तरुण गढ़पाले, श्री रंजन यादव जी, श्री धीरज बाकलीवाल जी, श्री गुरजीत सिंग जी, श्री ईश्वर मेश्राम जी, श्री सचिन पाल सिंह ठाकुर उपस्थित थे।

**खुशी जैन : नृत्य साधना का 25 वर्ष का सफर**- भरतनाट्यम की ख्यात कलाकार खुशी जैन पिछले 25 वर्षों से नृत्य की साधना कर रही हैं और 12 वर्षों से प्रशिक्षण दे रही हैं। उन्होंने केंद्रीय विद्यालय और साइंस कॉलेज में शिक्षिका के रूप में भी कार्य किया है और वर्तमान में दूरदर्शन रायपुर में भी अपनी सेवाएं दे रही हैं।

**डॉ. चंदन सिंह : राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय ख्याति के नर्तक**- कत्थक के विद्वान डॉ. चंदन सिंह ने खैरागढ़ से अपनी शिक्षा पूर्ण की है और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रस्तुति दी है। उन्हें सिंगरमणि सम्मान से सम्मानित किया गया है। डॉ. सिंह ने अपने नृत्य प्रशिक्षण से अनेक शिष्यों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है।

कौशिकी के सत्र में कर्नाटक से आयी कलाकार विदुषी निसर्गा दयन्नवर ने शामङ्कए ङ्कसभा में नृत्य में नवरस को समझते हुए नृत्य के माध्यम से अर्थ बतलाया और मनमोहक और ज्ञानवर्धक प्रस्तुति दिया साथ ही कुमारी नैनिका कासलीवाल ने भरतनाट्यम के वर्णम को समझते हुए नृत्य में किस प्रकार भावों का उपयोग होता है वह समझाया।

**प्रतिभागियों और निर्णायकों की शानदार भूमिका :** इस कार्यक्रम में लगभग 500 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। निर्णायक मंडल में अंकिता सोनी, आयुष श्रीवास्तव, वशिष्ठ विश्वकर्मा ममता सुरादा स्वाती मानकर, श्रीमति भारती यादव ने अपनी भूमिका निभाई।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रतिभागियों और आयोजकों का सहयोग सराहनीय रहा। प्रमुख सहयोगियों में श्रीमती सुषमा श्री, श्री ललित जैन, श्री पुलक महतो, डॉ. तनिष्क जैन, श्रेयस सिंघई, स्नेहा सोनी, सुमन महतो, के. तृष्णा, कुहू सुल्लेरे, सीमा भाटिया, जी.जयंतिक राव, नंदिनी कुमारी, गरिमा सिंह, नंदिका नायर पी., गुंजन महतो शामिल हैं।

कौशिकी 2024 ने न केवल बच्चों को अपनी कला और प्रतिभा दिखाने का अवसर दिया बल्कि दर्शकों को भी भारतीय नृत्य कला, गायन, चित्रकला की समृद्ध परंपरा से रूबरू कराया।

## सौर ऊर्जा से जगमग होगा जिले के 23 प्रमुख ऐतिहासिक एवं पर्यटक स्थल

**बलौदाबाजार ( )।** मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज सोनाखान की धरती से बलौदाबाजार भाटापारा जिले के 23 प्रमुख ऐतिहासिक एवं पर्यटक स्थलो के लिए सोलर हाईमास्ट लगाने की महत्वपूर्ण घोषणा की है। जिसमें 23 स्थानों में कुल 50 से अधिक नग सोलर हाईमास्ट लाईट लगाने की तैयारी की जा रही है। सोलर हाईमास्ट लाईट लगने से पर्यटकों को काफी सुविधा मिलेगी साथ ही पर्यावरण संरक्षण के साथ स्थल सुरक्षा को भी बढ़ावा मिलेगा। उक्त स्थलों में विकासखण्ड बलौदाबाजार अंतर्गत सिंहासनपाट मंदिर केशला सोनाडीह, कबीरसंत समागम आश्रम चंगोरीपुरी, शिव मंदिर डमरू, नग, सोनबरसा रिजर्व फॉरेस्ट (शुक्लाभाठा), ऑटोडरियम बलौदाबाजार, विकासखण्ड भाटापारा अंतर्गत योगद्वीप गुर्रा, मावली माता मंदिर सिंगारपुर, महामाया मंदिर तरेंगा, दुमनाथ मंदिर रामपुरविकासखण्ड कसडोल अंतर्गत सिध्दखोल वॉटर फॉल आदि शामिल है।

## प्लास्टिक पर खाद्य सामग्री विक्रय करने वाले व्यापारियो से 18400 रुपए की वसूली



**भिलाईनगर (विश्व परिवार)।** नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र के जोन क्रमांक 01, 02 03, 04 अंतर्गत सिंगलयूज प्लास्टिक रखने एवं सोर्स सेग्रीगेशन पृथक कर गीला सूखा कचरा नहीं देने वाले व्यवसायियों पर अभियान चलाया गया। जोन के स्वास्थ्य विभाग की टीम लगातार अलग-अलग जोन क्षेत्रों का भ्रमण कर रही है। वहां जो भी व्यापारी खादय सामग्री विक्रय कर रहे है या ठेला, खुमचा, टिन शेड लगाकर व्यापार कर रहे उनके पास जाकर जांच कर रही है। जो भी व्यापारी सिगलयूज प्लास्टिक में खादय पदार्थ का विक्रय कर रहे है और गीला व सूखा कचरा अलग-अलग कर नहीं दे रहे है उन व्यापारियो पर चालानी कार्यवाही कर समझाइस दी जा रही है।

आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने सभी जोन आयुक्त को निर्देश दिए है कि जो भी व्यापारी सिंगलयूज प्लास्टिक में खादय सामग्री विक्रय कर रहे है या व्यवसाय परिसर, फल ठेला के आस-पास गंदगी फैला रहे है या फिर गीला एवं सूखा कचरे को अलग-अलग डस्ट बिन में नही डाल रहे है। उनके पास जाकर कार्यवाही कर उनसे चालानी कार्यवाही की जाए। इन व्यापारियो से की गई चालानी कार्यवाही, सत्यम बेकरी एवं कैफे से 1000, हरिओम पेन्टस से 1000, जायका बेकरी 2000, वेज रेस्टोरेंट से 1000 एवं उत्पल दुकान से 500, लक्ष्मीकांत जनरल स्टोर्स से 1000, हटकेवाड़ा से 2000, जैन बिजली से 600, महालक्ष्मी मेस होटल 3000, जेके फोटोकापियर 500, इंदौरी पोहा सेंटर 1000, अरिहंत अनाज भंडार 500, अपोलो फार्मेसी 800, बालाजी लेडिस मेचिंग सेंटर 200, सांई डिजिटल 1000, होम मोबाईल 500 की वसूली की गई। साथ ही जोन क्रमांक 03 अंतर्गत वार्ड क्रं. 37 नंदिनी रोड के व्यापारियो से 1800 रूपये चलानी कार्यवाही कर 18400 रूपये का दाण्डिक शुल्क वसूला गया।

## संक्षिप्त समाचार

### उद्यानों को साफ-सुथरा बनाने के लिए चल रहा है विशेष सफाई अभियान



**भिलाईनगर (विश्व परिवार)।** नगर निगम भिलाई क्षेत्र में 150 से अधिक उद्यान है उन उद्यानों में साफ सफाई के लिए विशेष गैंग के द्वारा कार्ययोजना बनाकर अभियान चलाया जा रहा है आज नेहरू नगर के गणेश उद्यान में सफाई अभियान चलाया गया। भिलाई शहर के सभी जोन क्षेत्र में उद्यानों का निर्माण किया गया है। जहां पर आस-पास के वरिष्ठ नागरिकगण, बच्चे आदि खेलने, टहलने एवं व्यायाम करने आते रहते है। उद्यान साफ-सुथरा एवं हरा भरा रहने से पर्यावरण भी सुन्दर रहता है। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय का सख्त निर्देश है, कि सभी उद्यानों में कैलेंडर बनाकर के सफाई अभियान चलाया जाए। नगर निगम भिलाई के उद्यान साफ सुथरे हो, हरे-भरे हो, उसमें बराबर पानी मिले, खाद मिले जिससे हरियाली बनी रहे। इसके साथ ही नागरिकों से भी अपील है कि किसी प्रकार की गंदगी ना फैलाएं, पेड़ पौधों को ना तोड़े, उसे साफ सुथरा रखें। गार्डन को साफ सुथरा रखना सब की जिम्मेदारी है नगर निगम भिलाई के सीमित संसाधन है सभी उद्यानों में एक साथ सफाई नहीं की जा सकती है इसलिए सब लोग मिलकर सहयोग करेंगे, हमारे उद्यान हरे भरे रहेंगे।

### उद्यान अधिकारी के साथ गाली-गलौज, मारपीट करने के कारण सफाई कर्मचारी निलंबित

**भिलाई (विश्व परिवार)।** नगर निगम भिलाई के सफाई कर्मचारी संतोष कुमार द्वारा उद्यान अधिकारी तुलेश्वर साहू के साथ गाली गलौज मारपीट करने के कारण निलंबित किया गया। नगर निगम भिलाई का उद्यान विभाग में कार्यरत नियमित कर्मचारी संतोष कुमार अपने कर्तव्य के प्रति लापरवाही बढ़ती जा रही थी। शराब पीकर ड्यूटी पर आकर काम नहीं करता था, उसके खिलाफ उद्यान अधिकारी द्वारा बार-बार चेतावनी देने के बाद भी नहीं मानता था। काम नहीं करने के कारण जब उसका वेतन काटा गया तो गाली गलौज झगड़ा मारपीट पर उतारू हो गया। इस बात की शिकायत आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय के पास गई उन्होंने सफाई कामगार के कृत को घोर अनुशासनहीनता एवं उदासीनता का परिचायक मानते हुए छत्तीसगढ़ सिविल सेवा आचरण अधिनियम 1956 के नियम तीन के कंडिका 1,2,3 के विरुद्ध आचरण को मानते उसको कारण बताओ का नोटिस दिनांक 9.12.24 को जारी गया।



## कार्यालय नगर पंचायत कूंरा, जिला - रायपुर (छ.ग.)

e-mail -- npkunra2016 @gmail.com

कं./969/लो.नि.वि./न.पं./2024-25 कूंरा, दिनांक 11.12.2024

### // मैनुअल पद्धति निविदा सूचना //

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अन्तर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निविदा प्रपत्र "अ" में लो.नि.वि. एस. ओ.आर. 01.01.2015 (भवन /सड़क) से प्रभावशील एस.ओ.आर. दर से कम/अधिक या सामान दर पर अधोसंरचना मद अंतर्गत निर्माण कार्यों हेतु दिनांक 02.01.2025 अपरान्ह 4:00 बजे तक पंजीकृत डाक / स्पीड पोस्ट द्वारा त्रि - लिफाफा पद्धति से निविदा आंमत्रित की जाती है

| कं. स. | कार्य का विवरण | निविदा राशि (लाख में) | निविदा प्रपत्र हेतु आवेदन करने की अंतिम करने की तिथि व समय | आवेदन परीक्षण उपरांत निविदा प्रपत्र जारी करने तिथि व समय | स्पीड पोस्ट/पंजीकृत डाक द्वारा कार्यालय में निविदा प्राप्त होने की अंतिम तिथि व समय | निविदा प्रपत्र खोलने की तिथि व समय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | निकाय क्षेत्रांतर्गत विभिन्न वाडों में सी.सी. रोड एवं नाली निर्माण कार्य कुल 07 कार्य। | 39.16 | 26.12.2024 अपरान्ह 3:00 बजे तक | 27.12.2024 अपरान्ह 5:00 बजे तक | 02.01.2025 अपरान्ह 4:00 बजे तक | 03.01.2025 कार्यालयीन समय तक |

उपरोक्त निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज एवं अन्य जानकारी कार्यालय से अथवा विभागीय वेबसाइट www.uad.cg.gov.in में देखी जा सकती है।

**मुख्य नगर पालिका अधिकारी**
**नगर पंचायत कूंरा**

XI-HC-42

**उच्च न्यायालय, मध्यप्रदेश जबलपुर**
**प्रत्यर्थी को अपील की सूचना (नोटिस)**
(अधिनियम क्रमांक 5, सन् 1908 का आदेश इकतालिस, नियम 14)

By-HUMDAST
Respondent No. 5
Fixed for 17-01-2025
Admission and IA 18882/2023 for Stay

Process Id: 226647/2024 अपील क्रमांक MA/7428/2023

ORIENTAL INSURANCE COMPANY LIMITED अपीलार्थी
MAMTA SAHU and others प्रत्यर्थी

सन् 2019 के MVC क्रमांक 2688 सन् 2019 में न्यायालय Member, 22nd Addl. MACT. Shri S.R. Seenam, Jabalpur (MADHYA PRADESH) की डिक्री / आदेश, दिनांक 01-09-2023 के विरुद्ध अपील।

प्रति,
Ram Prakash Lodhi S/o Dashrath Lodhi
R/o - New Kusripar, Bhilai, District- Durg (CHHATTISGARH) प्रत्यर्थी

अपील की सुनवाई का दिनांक — कृपया सूचित करें कि ऊपर वर्णित अपील श्री Appellant द्वारा प्रस्तुत की गई और इस न्यायालय में पंजीयित की गई हैं तथा इस न्यायालय द्वारा अपील की सुनवाई का दिनांक 17-01-2025 नियत की गई हैं। आपत्तियां, प्रति आपत्तियां,यदि कोई हो,इस सूचना (नोटिस) के प्राप्त होने के दिनांक से एक महिने के भीतर फाइल की जानी चाहिए। कृपया इस बात से भी सूचित हो कि आपसे यह भी आपेक्षित हैं कि आप दिनांक 17-01-2025 को या उससे पहले

कागजात तथा दस्तावेज फाइल करने का दिनांक — ऐसे कागजात और दस्तावेजो की , जो आप कागजातो करने का दिनांक की पुस्तक में शामिल करना चाहते हैं , एक सूची अपने स्वयं के खर्च से तैयार करके इस न्यायालय में परिदत्त करें। सूची में ऐसे कागजात और दस्तावेजों का उल्लेख करना आवश्यक नहीं हैं जिन्हे इस न्यायालय के नियमों के अधीन शामिल किये जाने की बाध्यता हैं।

सूची निम्नलिखित फार्म में होना चाहिये:-

| कागजात का विवरण (दिनांक सुभेदक चिन्ह् तथा पृष्ठ संख्या) (1) | पूरा शामिल किया जाना हैं या उसका एक भाग शामिल किया जाना हैं (यदि कोई एक भाग शामिल किया जाना हो, तो पंक्तियों आदि का उद्धरण देते हुए स्पष्ट रुप से विनिर्दिष्ट करें) (2) | कागजात की पुस्तक का पृष्ठ (कार्यालय में भरा जाय) (3) |
|---|---|---|

यदि आप कागजात की पुस्तक में कोई कागज शामिल नहीं करना चाहते हो,तो यह अपेक्षित हैं कि आप उक्त दिनांक 17-01-2025 को या उसके पहले एक रिक्त सूची फाइल करें।

आपको अपील की सुनवाई के लिए नियत दिनांक को तैयार रहना चाहिए , किन्तु यदि न्यायालय के काम - काज के कारण अपील उस दिनांक को न्यायालय में न सुनी जा सके तो वह उसके बाद यथासाध्य शीघ्र न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की जायेगी। यदि आपकी ओर से आप स्वयं , आपका वकील या इस अपील के संबंध में आपके लिए कार्य करने के लिये विधिवत् प्राधिकृत कोई व्यक्ति उपस्थित नहीं हुआ, तो अपील आपकी अनुपस्थिति में सुनी जायेगी और निर्णय दिया जायेगा।

अपील से संयत निचले न्यायालयों में अभिलेख इस न्यायालय में प्राप्त हो गए हैं और निरीक्षण के लिए उपलब्ध हैं।

आज दिनांक 26.11.2024 को मेरे हस्ताक्षर और उच्च न्यायालय, मध्यप्रदेश, जबलपुर की मुहर से दिया गया।

मुहर

**प्रधान सहायक न्यायिक शाखा**
MA-DA-10

## कार्यालय नगर पालिक निगम रायपुर
## जोन क्रमांक - 05

### :: निविदा आमंत्रण सूचना ::

**क्र.1039A/ जोन क्र.5/न.पा.नि./ 2024** **रायपुर दिनांक 10.12.2024**

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत द से प्रवर श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नाकिंत कार्यो हेतु सीलबंद निविदाय तीन लिफाफा पद्धति में दिनांक 02.01.2024 तक को 4:00 बजे तक स्पीड पोस्ट के माध्यम से नगर पालिका निगम जोन कार्यालय क्रमांक 5 में आमंत्रित की जाती है। इस हेतु निविदा प्रपत्र प्राप्त करने के लिये दिनांक 20.12.2024 तक आवेदन के साथ निर्धारित निविदा प्रपत्र की राशि जमा करने से पश्चात् प्राप्त किये जा सकेंगे। दिनांक 26.12.2024 तक निविदा प्रपत्र जारी होंगे। प्राप्त निविदायें दिनांक 02.01.2024 की सांय 5:00 बजे खोली जावेगी।

| क्र. | कार्य का नाम | प्राक्कलन राशि (लाख में) | अमानत राशि (रूपये) | निविदा प्रपत्र का मूल्य | कार्य की अवधि | एस. ओ. आर. नॉन. एस.ओ.आर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | वार्ड क्र. 43 अंतर्गत महंत लक्ष्मी नारायण दास वार्ड 43 जोन क्र. 05 सामुदायिक भवन निर्माण, गांधी घर, पटेल गली, महामाई पारा, पुरानी बस्ती रायपुर। (विधायक निधि) | 20.00 | 20000/- | 750/- | 8 माह | PWD SOR Building 01.01.15 |
| 2 | वामनराव लाखे वार्ड क्र. 66 के विभिन्न स्थानों में पी.सी.सी. नाली पुलिया एवं रोड निर्माण कार्य। (अधोसंरचना मद) | 10.82 | 10850/- | 750/- | 05 माह | PWD SOR Building 01.01.15 |
| 3 | वामनराव लाखे वार्ड क्र. 66 जोन क्र. 05 सामुदायिक भवन में अतिरिक्त कक्ष निर्माण मां कर्मा सामुदायिक भवन, पानी टंकी के पास, कुशालपुर रायपुर । (विधायक निधि) | 5.00 | 7500/- | 750/- | 05 माह | PWD SOR Building 01.01.15 |
| 4 | जोन क्र. 05 अंतर्गत वार्ड क्र. 68 के विभिन्न स्थानों में जल प्रदाय पाईप लाईन मरम्मत कार्य। (संधारण मद) | 01.99 | 3000/- | 300/- | 04 माह | P.H.E.D. SOR w.e.f. 01.06.2020 |
| 5 | जोन क्र. 05 अंतर्गत वार्ड क्र. 40 के विभिन्न स्थानों में जल प्रदाय पाईप लाईन मरम्मत कार्य। (संधारण मद) | 01.97 | 3000/- | 300/- | 04 माह | P.H.E.D. SOR w.e.f. 01.06.2020 |
| 6 | जोन क्र. 05 अंतर्गत वार्ड क्र. 67 के विभिन्न स्थानों में जल प्रदाय पाईप लाईन मरम्मत कार्य। (संधारण मद) | 01.96 | 3000/- | 300/- | 04 माह | P.H.E.D. SOR w.e.f. 01.06.2020 |
| 7 | जोन क्र. 05 अंतर्गत एल.ई.डी. सड़क बत्ती का संधारण कार्य। (द्वितीय निविदा) | 3.95 | 6000/- | 750/- | 03 माह | NON. SOR |
| 9 | वामनराव लाखे वार्ड क्र. 66 अंतर्गत बुढादेव सामुदायिक भवन में विद्युतीकरण एवं अन्य कार्य। (सड़क बाधा) | 1.00 | 3000/- | 300/- | 03 माह | PWD SOR Building 01.01.15 (Electreal SOR 01.06.2020) |
| 10 | जोन क्र. 05 अंतर्गत सफाई एवं कचरा परिवहन कार्य हेतु 07 नग ट्रेक्टर ट्राली किराये पर रखे जाने का कार्य। | 18.95 | 20000/- | 750/- | 10 माह | NON. SOR |
| 11 | जोन क्र. 05 अंतर्गत 08 स्वच्छता कमांडो रखे जाने बाबत। | 9.81 | 9850/- | 750/- | 12 माह | Collecter Rate |

**शर्त**

1 निविदा के दस्तावेज रजिस्टर्ड पोस्ट / स्पीड पोस्ट के माध्यम से प्रस्तुत करना होगा।
2 कार्य से संबंधित अन्य जानकारी एवं शर्ते कार्यालयीन दिवस में नगर पालिक निगम जोन क्रमांक 5 कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
3 तीन वर्ष के आयकर की बाध्यता नए फर्मों के लिए बाध्यकारी नहीं होगी।

**घरो से निकलने वाले सूखा और गिला कचरे को सफाई मित्र (वाहन) को देवें।**

**जोन कमिश्नर**
**जोन क्र. 05**
**नगर पालिक निगम, रायपुर**

### कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर

(छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

**आम-सूचना**

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनांतर्गत कॉलोनी **डुमरतराई फेस I** जिला रायपुर में स्थित **एम.आई.जी. फ्लैट क्रमांक-107, ब्लॉक-05. तृतीय तल, श्री अमरेन्द्र डे, पिता श्री दालिम कुमार के ,** के नाम पर इस कार्यालय का नामांतरण आदेश **क्रमांक 189 दिनांक 05.12.2024** द्वारा नामांतरण किया गया है। द्वितीय नामांतरण आबंटी द्वारा **उक्त फ्लैट को क्रेता श्री प्रकाश मिश्रा, पिता श्री रामदेव मिश्रा, निवासी- फ्लैट नं- 107, ब्लॉक- 05. हिमालयन हाईट्स, डुमरतराई, रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में दिनांक 10.10. 2024 को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान **क्रेता श्री प्रकाश मिश्रा, पिता श्री रामदेव मिश्रा,** द्वारा उक्त भवन को फ्री होल्ड नामांतरण पश्चात अपने नाम पर दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत. उक्त फ्लैट के नाम दर्ज करने के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नही किया जावेगा।

**सम्पदा अधिकारी,**
**छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,**
**प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर छ.ग.**

### कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर

(छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

**आम-सूचना**

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा, दीनदयाल आवास योजनातंर्गत खम्हारडीह, रायपुर में स्थित **एल.आई.जी. फ्लैट क्र. -331, ब्लॉक नं- 14,** (पाचवा तल) को इस कार्यालय के नामांतरण आदेश **क्रमांक 87 दिनांक 30.07.2016** के द्वारा **श्री बी. रेजू कोशी पिता स्व. श्री सी. के. बेबी,** के नाम पर नामांतरित किया गया है।

वर्तमान में नामांतरी **श्री बी. रेजू कोशी पिता स्व. श्री सी. के. बेबी, निवासी:- एल.आई.जी.-24, तिलक नगर, गुढ़ियारी रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त फ्लैट को **क्रेता श्री गोपाल पालीवाल पिता श्री रेवती लाल पालीवाल, निवासी: 491/49, सितला मंदिर रोड़, डॉ. आर.आर.वर्मा के बाजू, डी.डी.यू नगर, रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना विक्रय इकरारनामा, विक्रय विलेख, शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेज के साथ आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त फ्लैट के विक्रय करने के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

**सम्पदा अधिकारी,**
**छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,**
**सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)**

### कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर

प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

**// आम-सूचना //**

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा अटल आवास योजना **बेलभाठा, अभनपुर, रायपुर** में निर्मित स्वतंत्र भवन **क्रमांक-459, श्री बलभद्र भारद्वाज पिता स्व.श्री केजू राम भारद्वाज,** के नाम पर इस कार्यालय के आबंटन आदेश **क्रमांक 1213 दिनांक 15.02.2011** के माध्यम से आबंटित है। आबंटी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में **दिनांक 15.04.2011** को लीजडीड पंजीकृत उपरांत **दिनांक 04.02.2014** को हस्तांतरण विलेख (फ्री-होल्ड) निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण-विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को **श्री कन्हैया लाल पात्रे पिता श्री प्यारी लाल पात्रे, निवासी:- ग्राम धनेली, थाना माना केम्प, तहसील रायपुर, जिला-रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में **दिनांक 09.10.2023** को विक्रय-विलेख के माध्यम से विक्रय कर दिया गया है। **क्रेता श्री कन्हैया लाल पात्रे पिता श्री प्यारी लाल पात्रे,** द्वारा उक्त भवन को फ्री-होल्ड पश्चात अपने नाम पर मण्डल के अभिलेखों में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन का फ्री होल्ड उपरांत मण्डल के अभिलेखों में नाम दर्ज करने के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

**सम्पदा अधिकारी**
**छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल**
**सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना**
**नवा रायपुर, अटल नगर**

### कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

**पत्र क्र./16408/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024**
**रायपुर, दिनांक 10-12-2024**

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र.** 16408
**वार्ड का नाम-11- कालीमाता वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **11** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR229H00095** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MIR ARIF ALI** पिता/पति श्री/श्रीमती **MR. M.N. ALI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **डॉ. उबैद अली** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता मीर आरिफ अली** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
**श्री विवेकानन्द दुबे**
**(जोन कमिश्नर)**
**जोन क्रं.- (3)**
**नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)**

### कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

**पत्र क्रं./16372/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024**
**रायपुर दिनांक : 11-12-2024**

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र.** 16372
**वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652B00755** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KEVARA BAI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE MUNSHILAL DEVDAS** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GAUTAM SARKAR** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O SUBHASH SARKAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
**(जोन कमिश्नर)**
**जोन क्रं. - 6**
**नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)**

### कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

**पत्र क्रं./16370/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024**
**रायपुर दिनांक : 11-12-2024**

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र.** 16370
**वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR652A00026** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ANIL KUMAR SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAKESH KUMAR SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MOHANI DEVI SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O KHUBI RAM SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
**(जोन कमिश्नर)**
**जोन क्रं. - 6**
**नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)**

### कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

**पत्र क्रं./16368/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024**
**रायपुर दिनांक : 11-12-2024**

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र.** 16368
**वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR652B00416** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAJESHWARI PAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JITENDRA PAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SK ASRAF HOSAAIN** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O SK MOSARAF HOSAIN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
**(जोन कमिश्नर)**
**जोन क्रं. - 6**
**नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)**

### कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)

प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

**पत्र क्र./16431/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024**
**रायपुर, दिनांक 11-12-2024**

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र.** 16431
**वार्ड का नाम-46-मौलाना अब्दुल रऊफ वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **46** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR741B00299** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **GULABCHAND** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JEEVAN LAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **महेश कुमार खीलोसीया 2 जितेन्द्र कुमार खीलोसीया** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. गुलाब चंद खीलोसीया** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
**(जोन कमिश्नर)**
**जोन क्रमांक-4**
**नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)**

www.vishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@yahoo.com

दैनिक
# विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 12 दिसंबर 2024



# विधायक भावना ने पांडातराई के विभिन्न वार्डों का किया दौरा

**जनता की समस्याओं का निराकरण करने अधिकारियों को दिए दिशा निर्देश**

**कवर्धा(विश्व परिवार)।** जनता की समस्या हो या क्षेत्र में विकास कार्यों की सौगात, पंडरिया विधायक भावना बोहरा द्वारा लगातार इसके लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है। आज पांडातराई में भी भावना बोहरा ने जनसंपर्क किया और क्षेत्रवासियों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं का समाधान किया। इस दौरान उन्होंने पांडातराई महाविद्यालय का औचक निरीक्षण किया एवं विद्यार्थियों की सुविधा व शिक्षा को लेकर आवश्यक निर्देश दिए। मंगलवार को पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने पांडातराई के वार्ड क्रमांक 6 एवं 9 में सघन जनसंपर्क कर क्षेत्रवासियों से मुलाकात की और उनकी समस्याओं का निराकरण किया। इस अवसर पर विधायक भावना बोहरा ने कहा कि जनता से लगातार संपर्क और संवाद से ही क्षेत्र का विकास संभव है। हमने यह लक्ष्य निर्धारित किया है कि जितना ज्यादा हो सके जनता से सीधे संवाद करें, उनके सुझाव प्राप्त करे और उसका निराकरण कर क्षेत्र के विकास के लिए कार्य करें। यह सब जनता और जनप्रतिनिधि के आपसी सामंजस्य से ही पूरा होगा। इसलिए हमने यह पहल शुरू की है और जनता का भी इसमें भरपूर सहयोग मिल रहा है। हमने महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की सुविधा और शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर भी आज महाविद्यालय का औचक निरीक्षण किया। विद्यार्थियों से शिक्षा, शिक्षकों एवं महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं को लेकर भी चर्चा की और वहां जो समस्याएं सामने आई है उसे तत्काल दूर करने के लिए शासन व महाविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। विगत एक वर्ष में इसी जनसंवाद एवं क्षेत्रवासियों के मार्गदर्शन से हम लगातार पूरे पंडरिया विधानसभा में विकास कार्यों की सौगात जनता को समर्पित कर रहें हैं। सड़क,बिजली,पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं से लेकर अधोसंरचना विकास के कार्य भी लगातार हो रहें हैं। यह सभी विकास कार्य आने वाले समय मे जनता की सुविधा एवं क्षेत्र के विकास को नई गति एवं दिशा देंगे। उन्होंने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ में माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार विकसित भारत-विकसित छत्तीसगढ़ के लक्ष्य को निर्धारित करके निरंतर कार्य कर रही है। यह लक्ष्य तभी संभव हो सकता है जब हम जनता की सुविधाओं का विस्तार करें, अधोसंरचनाओं का विकास करें एवं जनहित के लिए चलाई जा रही योजनाओं का जमीनी स्तर तक क्रियान्वयन करें, जिसके लिए हमें जनता के बीच जाना होगा। एक जनप्रतिनिधि का कार्य यही है कि वह अपने क्षेत्रवासियों के लिए हमेशा उपलब्ध रहे, उनकी समस्याओं को सुनें, क्षेत्र की प्रगति के लिए उनके सुझावों पर अमल करें, इसलिए हम लगातार जनसंपर्क के माध्यम से जनता के समक्ष पहुंचकर हर संभव प्रयास कर रहें हैं जिससे जनता को सुविधा मिले, क्षेत्र की प्रगति हो और पंडरिया विधानसभा को समृद्ध बनाने के हमारे लक्ष्य को हम प्राप्त कर सकें।

## संक्षिप्त समाचार

### पशु तस्करी के मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार

**रायगढ़(विश्व परिवार)।** रायगढ़ के चक्रधरनगर थाना क्षेत्र में पुलिस ने पशु तस्करों पर कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है तथा उनके पास से 9 मवेशियों को मुक्त कराया। मिली जानकारी के अनुसार दीपक माझी (25), निवासी पंजरी प्लांट ने कुछ लोगों को पशुओं को ले जाते हुए देखा और पुछताछ की तो उन्होंने सही जवाब नहीं दिया, जिससे उसे संदेह हुआ। जिसके बाद दीपक ने तत्काल चक्रधरनगर पुलिस को सूचना दी। सूचना पर चक्रधरनगर थाना प्रभारी प्रशांत राव और उनकी टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने तीनों आरोपियों को पकड़ते हुए 9 मवेशियों को तस्करों से मुक्त कराया। तथा मामले में तीन आरोपी रोहित प्रधान निवासी ससकोबा, गुड्डा राम राठिया निवासी ससकोबा तथा नैहर साय यादव निवासी ससकोबा को गिरफ्तार किया गया। मामले में पुलिस ने चक्रधरनगर थाना में आरोपियों के खिलाफ धारा 4, 6, 10 कृषक पशु परिरक्षण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर उन्हें न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है।

### मेटाडोर में लटका मिला शव, हत्या की आशंका

**बलौदाबाजार(विश्व परिवार)।** भाटापारा मंडी गेट के सामने एक मेटाडोर के केबिन में एक व्यक्ति का शव लटका हुआ मिलने से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। यह शव सुबह-सुबह मेटाडोर के चालक दरवाजे के ऊपर केबिन में लटका हुआ पाया गया, जिसे राहगीरों ने देखा और पुलिस को सूचना दी। भाटापारा शहर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव का पंचनामा किया और प्रथम दृष्ट्या हत्या की आशंका जताते हुए मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने शव की पहचान और घटनास्थल से जुड़े अन्य पहलुओं की जांच शुरू कर दी है, ताकि घटना के सही कारण का पता चल सके। पुलिस द्वारा मामले की गहनता से पड़ताल की जा रही है।

### कलेक्टर रोहित व्यास ने ईव्हीएम वेयरहाउस का किया निरीक्षण

**जशपुरनगर(विश्व परिवार)।** कलेक्टर रोहित व्यास ने आगामी स्थानीय निर्वाचनों के पूर्व सभी ईव्हीएम के उचित रखरखाव हेतु जशपुर तहसील कार्यालय में बनाए गए ईव्हीएम एवं व्हीव्ही पैट वेयरहाउस का मंगलवार को निरीक्षण किया। इस अवसर पर कलेक्टर ने स्ट्रांग रूम का निरीक्षण करते हुए इंतजामों के संबंध में जानकारी ली और सीसीटीवी के माध्यम से सभी कक्षों की निगरानी की भी जानकारी ली। इस दौरान कलेक्टर ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ स्ट्रांग रूम का निरीक्षण करते हुए उनसे सुरक्षा संबंधित पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने ईव्हीएम वेयरहाउस में ईव्हीएम के सुरक्षित रखरखाव हेतु निर्देश दिए।

### पक्का आशियाना पाकर गदगद हुई शांति बाई

**कवर्धा(विश्व परिवार)।** कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उनका खुद का पक्का मकान होगा। लेकिन आज, जिले के बोड़ला जनपद पंचायत के सिघनपुरी ग्राम पंचायत के आश्रित ग्राम हाथीडोब की शांति बाई बैगा का यह सपना साकार हो गया है। विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा समुदाय से आने वाली शांति बाई ने अपने जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को पीछे छोड़ते हुए प्रधानमंत्री जनमन योजना के तहत न केवल अपना पक्का आवास बनाया, बल्कि सरकार की अन्य योजनाओं से भी भरपूर लाभ उठाकर अपने जीवन में नई खुशियां पाई हैं। विधवा और एकल महिला होने के बावजूद, शासन की मदद से शांति बाई ने यह दिखा दिया कि इच्छाशक्ति और शासन की योजनाओं का सही उपयोग लोगों की जिंदगी में बड़े बदलाव ला सकता है। उनकी कहानी शासन की योजनाओं के प्रभाव और समाज के सबसे वंचित वर्गों के उत्थान की प्रेरणादायक मिसाल है। शांति बाई बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा समुदाय से है। प्रधानमंत्री जनमन योजना अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2023-24 में आवास की स्वीकृति प्रदान कर दी गई एवं प्रथम किश्त की राशि के 40 हजार रूपए आवास स्वीकृति के पश्चात उनके बैंक खाता में ऑनलाईन डी.बी.टी के माध्यम से की गई। प्लींथ स्तर के पश्चात द्वितीय किश्त की राशि 60 हजार रूपए तथा छत स्तर के पश्चात तृतीय किश्त की राशि 80 हजार रूपए उपलब्ध कराई गई। राशि 20 हजार रूपए जब आवास पूर्ण हो गया जब उन्हे अंतिम किश्त के रूप मे उपलब्ध कराया गया, जिससे शांति बाई बैगा द्वारा जिले का प्रथम प्रधानमंत्री जनमन आवास को पूर्ण कराने में काफी सुविधा हुई। शासन से घर बनाने के लिए पैसे मिल गये और घर का काम करने से इन्हे महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना(मनरेगा) के तहत 95 दिवस की मजदूरी भुगतान की राशि 23 हजार 850 एवं स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण के तहत शौचालय निर्माण के लिए 12 हजार रूपए की राशि अभिषरण के माध्यम से मिला।

# मुख्यमंत्री के पहल पर जरही के 73 भू- विस्थापित को मिलेगी नौकरी

**गोपाल सिंह विद्रोही**

**सूरजपुर ब्यूरो( दैनिक विश्व परिवार )** छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर जिला प्रशासन सूरजपुर ने जरही के 56 भू विस्थापित परिवारों के लिए 16 नवंबर को जरही में अभिलेख सत्यापन हेतु विशेष शिविर का आयोजन किया गया था। कलेक्टर एस जयवर्धन के निर्देश पर शिविर पर राजस्व अधिकारी व एसईसीएल की सत्यापन हेतु गठित समिति शिविर में सम्मिलित थी। जिसके द्वारा शिविर दिवस पर सत्यापन की प्रक्रिया पूर्ण की गई। एसईसीएल के महाप्रबंधक (कार्मिक) के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार जरही के 73 आवेदकों का डॉक्यूमेंट वेरिफिक्रेशन व पारिवारिक सहमति की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है, जिन्हें शीघ्र एसईसीएल में रोजगार प्रदान किया जाएगा। महामाया खुली खदान के लिए जरही, दुरती, सेन्धोपारा, कपसरा व बरौधी 5 गांव से भूमि अधिग्रहण किया गया है। भारत सरकार कोयला मंत्रालय द्वारा इन गांवों का भूमि अधिग्रहण तीन चरणों में किया गया है। अधिग्रहित निजी भूमि के बदले 638 परिवार के लिए रोजगार के दरवाजे खुलेंगे। जिसके तहत ग्राम जरही की अधिग्रहित भूमि के एवज में 16 नवंबर को सांस्कृतिक भवन, नगर पंचायत जरही में अभिलेख सत्यापन हेतु विशेष शिविर का आयोजन किया गया था। शिविर में जिला प्रशासन की ओर से राजस्व अमला व एसईसीएल के संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति में 56 भू स्वामियों के द्वारा प्रस्तावित उम्मीदवारों का अभिलेख सत्यापन किया गया। 30 नवंबर की स्थिति तक मुख्यालय बिलासपुर में, जरही के कुल स्वीकृत रोजगार हेतु आवेदको की संख्या 76 है, जिसमें से 73 आवेदको के परिवार की सहमति एवं डॉक्यूमेंट वेरिफिक्रेशन का कार्य एसडीएम प्रतापपुर व एसईसीएल के गठित टीम द्वारा किया जा चुका है। इन आवेदको को एसईसीएल के नियमानुसार कैटेगरी 1 में रोजगार प्रदाय किया जायेगा। सत्यापन की प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूर्ण कर चुके उम्मीदवारों ने मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय को उनकी इस विशेष पहल के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया है।

# कलेक्टर ने जनपद पंचायतों के कार्यों की ली समीक्षा बैठक

**जशपुरनगर(विश्व परिवार)।** जनपद पंचायतों के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों की समीक्षा हेतु कलेक्टर रोहित व्यास ने मंगलवार को बैठक आहूत की। इस बैठक में कलेक्टर ने साप्ताहिक रूप से किए गए कार्यों की जानकारी लेते हुए सभी अधिकारियों को नियमित रूप से मैदानी भ्रमण करते हुए इनकी जानकारी फोटो के साथ अपडेट करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने सभी जनपद सीईओ को लगातार शेड्यूल बनाकर मैदानी भ्रमण करते हुए नवीन विकासात्मक परियोजनाओं का निर्माण करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत अधिक से अधिक लोगों का पंजीयन कराने तथा अपात्र पाए आवेदनों को निरस्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने पीएम जनमन योजना अंतर्गत आवासों के निर्माण में तेजी लाने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने ग्रामीण सचिवालयों का साप्ताहिक रूप से नियमित संचालन करते हुए ग्रामीणों की समस्याओं का निदान करने के निर्देश दिए। उन्होंने आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं की भर्ती प्रक्रिया में त्वरित प्रक्रिया करते हुए इन्हें जल्द से जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत सभी जनपद पंचायतों में व्यक्तिगत शौंचालयों के आने वाले आवेदनों पर त्वरित कार्रवाई कर सभी के लिए अधिक सेअधिक शौंचालयों का निर्माण के निर्देश दिए। उन्होंने प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के तहत चल रहे कार्यों की गति को तीव्र करने हेतु लोगों को प्रोत्साहित करने को भी कहा। मनरेगा योजनान्तर्गत सभी को 100 दिनों के रोजगार के साथ समयानुसार भुगतान सुनिश्चित करने एवं स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत सभी सार्वजनिक संस्थाओं एवं सार्वजनिक स्थानों में शौंचालय निर्माण हेतु निर्देश दिए। उन्होंने ग्राम पंचायतों के बड़े बाजारों एवं मुख्य सड़कों के आस पास सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा डोर टू डोर कचरे के उठाव के लिए गांवों में व्यवस्था निर्माण के लिए प्रभावी कार्य योजना बनाने के निर्देश दिए।

## कलेक्टर रोहित व्यास ने जनदर्शन के प्रकरणों का समयानुसार निराकरण के दिये निर्देश

**जशपुर(विश्व परिवार)।** मंगलवार को कलेक्टर रोहित व्यास की अध्यक्षता में जिला कार्यालय सभाकक्ष में समय सीमा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में कलेक्टर ने मुख्यमंत्री जनदर्शन, कलेक्टर जनदर्शन और समय-सीमा के लंबित प्रकरणों का निराकरण समयानुसार करने के निर्देश दिए और सभी अधिकारियों को अपने विभाग से संबंधित लंबित आवेदनों को स्वयं समीक्षा करने के लिए कहा। कलेक्टर ने सभी विभागों के समन्वय से लंबित प्रकरणों पर कार्य करने को कहा। उन्होंने महतारी वंदन योजना के हितग्राहियों के घरों की सभी बालिकाओं को सुकन्या समृद्धि योजना के तहत पंजीयन कराकर लाभान्वित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही जिला अस्पताल में ब्लड की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा आम लोगों को ब्लड डोनेशन के लिए प्रेरित करने के लिए जिला प्रशासन के विभिन्न विभागों के द्वारा ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन करने के निर्देश दिए। इस शिविर में सभी विभागों के अधिकारी - कर्मचारी ब्लड डोनेट करेंगे। जिसके तहत सभी विभागों के लिए रोस्टर तैयार किया गया है। इसके माध्यम से 940 यूनिट ब्लड का डोनेशन कराने का लक्ष्य बनाया गया है। बैठक में जिला पंचायत सीईओ अभिषेक कुमार, अपर कलेक्टर प्रदीप कुमार साहू, एसडीएम ओंकार यादव, नंदजी पण्डेय, आकांक्षा त्रिपाठी सहित सभी विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

# शिक्षकों ने दिखाई दरिया दिली स्वयं के पैसे से छात्रों को भेंट की स्वेटर

**सूरजपुर ब्यूरो( दैनिक विश्व परिवार)-** सूरजपुर जिले केदूरस्थ कुमेंली जलप्रपात के समीप विशेष पिछड़ी जनजाति पंडो बस्ती परशुरामपुर में संचालित प्राथमिक शाला बंडा भैंसा के प्रधान पाठक श्याम दास, सहायक शिक्षक धन साय शांडिल्य एवं रघुपाल सिंह ने स्वयं के वेतन से 62 छात्रों को स्वेटर प्रदान किया। इस विद्यालय में विशेष पिछड़ी जनजाति के 50 पंडो छात्र दर्ज हैं। शिक्षकों के प्रयास से यहां की उपस्थिति भी अच्छी है आज की उपस्थिति 45 पाई गई जिसमें 40 पंडो बच्चे उपस्थित थे। सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी मनोज कुमार साहू एवं संकुल प्राचार्य चंद्र विजय सिंह ने आज विद्यालय में आंशिक न्योता भोजन उपलब्ध कराया छात्रों को सेवई एवं केला फ्ल प्रदाय किया गया। उन्होंने कहा कि ठंड के मौसम में छात्रों को स्वेटर देने की पहल उनके संवेदन शीलता का परिचायक हैं। निश्चित रूप से संयुक्त संचालक शिक्षा श्री हेमंत उपाध्याय के द्वारा दिए गए ''थीम वाक्य'' बाल देवो भव: को शिक्षक चरितार्थ कर रहे हैं। कुछ बच्चे अस्वस्थ प्रतीत होने पर सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र परशुरामपुर में पदस्थ डॉक्टर एस के त्रिपाठी से फोन पर चर्चा कर एक लघु स्वास्थ्य शिविर लगाने का अनुरोध किया इसे स्वीकार करके डॉक्टर त्रिपाठी आगामी सोमवार को स्वास्थ्य शिविर हेतु अस्वस्थ किया है। इस अवसर पर शाला प्रबंधन समिति के अध्यक्ष कृष्णा राजवाडे समेत ग्रामीण भी उपस्थित थे।

# सूरजपुर जिला के भाजपा मंडलों में मंडल अध्यक्षों का चुनाव जिला अध्यक्ष के लिए बड़ी चुनौती

**रामानुज नगर भाजपा मंडल इकाई चुनाव को लेकर काफी गहमा गहमी**

**गोपाल सिंह विद्रोही**

**सूरजपुर ब्यूरो( दैनिक विश्व परिवार )**-सूरजपुर जिला के विभिन्न मंडलों में भाजपा मंडल अध्यक्ष को लेकर कार्यकर्ताओं में चल रहा है कि घमासान। जानकारी के अनुसार रामानुजनगर।भाजपा में मंडल अध्यक्ष चुनाव को लेकर भारी घमासान मचा हुआ है।15 दिसम्बर के पहले मण्डल अध्यक्ष के नाम का ऐलान हो जाना है।आम सहमति से होने वाले इस चुनाव में मापदण्ड नही बल्कि परिक्रमा में पारंगत लोगो को तरजीह देने की तैयारी से आम कार्यकर्ताओ में भारी रोष सामने आ रहा है।हालात यह है कि शिकवा शिकायतों का दौर भी शुरू हो गया है।कार्यकर्ताओ का दर्द यह है कि पार्टी में दरी बिछा कर समर्पित भाव से सेवा करने वालो को कोई मौका नही मिल रहा है।पार्टी के साथ बूथ स्तर के हुई बैठकों के दौरान मण्डल अध्यक्ष पद के लिए सर्वसम्मति से कुछ नियम तय किये गए किन्तु अब जब इनके चयन की बारी आई तो नियमो को दरकिनार कर ऐसे लोगो को उपकृत करने की तैयारी है जो कभी पार्टी के लिए समर्पित रहे नही अपितु उनकी वफादारी व निष्ठा व्यक्ति के प्रति रही है।ऐसे ही प्रयास को देखते हुए रामानुजनगर मण्डल से शिकायतें सामने आई है जिसमे इस चयन प्रक्रिया पर सवाल खड़े किए जा रहे है।मण्डल अध्यक्ष जयप्रकाश उपाध्याय ने चुनाव प्रभारी चम्पादेवी पावले को लिखे एक पत्र में कहा है कि भा.ज.पा. संगठन चुनाव को लेकर दिनांक 07.12.2024 को मण्डल अध्यक्ष का चुनाव हेतु राय मशवरा करा कर उम्मीदवारों का नाम पैनल के माध्यम से जिला संगठन को भेजा गया था। मण्डल रामानुजनगर से कुल 11 आवेदन प्राप्त हुए थे जिसमे से आयु मापदण्ड के कारण 2 आवेदकों के द्वारा आवेदन वापस ले लिया गया शेष 9 आवेदकों का आवेदन जमा किया गया। जबकि भा.ज.पा. संगठन के निर्देशानुसार मण्डल अध्यक्ष के लिए आयु सीमा 35 से 45 वर्ष के मध्य होना निधारित किया गया है। मण्डल रामानुजनगर से भी निर्देशानुसार चयन हेतु प्रक्रिया पूर्ण किया गया था किन्तु कुछ उम्मीदवारों के द्वारा अपनी आयु सीमा को दर्शाने के लिए जो साक्ष्य प्रस्तुत किये गये वह कुटरचित हैं जिसकी जानकारी सोसल मिडिया के द्वारा प्राप्त हुआ है। यदि उम्मीदवारों के द्वारा आयु हेतू गलत जानकारी दिया गया हैं तो वह नियम विरूद्ध, अनौतिक व असंगठात्मक हैं। चुनाव प्रक्रिया में आयु संबंध में पार्टी व संगठन के दिशा निर्देशों का कड़ाई से पालन कराते हुए सूची जारी करने की मांग की गई है।, यदि इस संबंध में पार्टी के दिशा निर्देशों का पालन नहीं किया जाता हैं तो पार्टी कार्यकत्ताओं के मन में असंतोष का भावना बढ़ेगा जिस कारण संगठन में गलत संदेश जावेगा। क्योकि आयु सीमा संबंध में चयन प्रक्रिया पूर्ण कराने हेतु प्रस्ताव पार्टी कार्यकत्ताओं के मध्य पारित किया गया है। बताया जाता है इस तरह की शिकायत अन्य कार्यकर्ताओ ने भी की है। इसी तरह शिवनंदनपुर भाजपा मंडल में मंडल अध्यक्ष चुनाव से पूर्व जिला भाजपा अध्यक्ष की उपस्थिति में एक बैठक संपन्न हुई जिसमें अध्यक्ष मंडल अध्यक्ष को लेकर भी कार्यकर्ताओं में आक्रोश देखा गया भाजपा कार्यकर्ता बताते हैं कि भाजपा के सभी बड़े नेता अपना समर्थन को मंडल अध्यक्ष बनना चाहते हैं भले ही वह पार्टी के लिए नया हो , जमीनी कार्यकर्ता न हो ।इस तरह का प्रत्यक भाजपा मंडल में देखने को मिल रहा है जो जिला भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल अग्रवाल के लिए एक बड़ी चुनौती माना जा रहा है।

दैनिक
# विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर गुरूवार 12 दिसंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com



## संपादकीय

# आर्थिक बदहाली की सीधे जिम्मेदार सरकार

सरकार ने पेट्रोलियम की कीमतों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने की नीति पर सचमुच अमल किया होता, तो साढ़े 36 लाख करोड़ रुपये लोगों की जेब में बचते। इतना पैसा उपभोग क्षेत्र में जाता। बेशक उससे बाजार को जो बल मिल सकता था। संसद में बताया गया है कि 2019-20 से 2023-24 तक केंद्र सरकार ने पेट्रोलियम पर कर/ उपकर/ शुल्क से 36,58,354 करोड़ रुपये वसूले। ध्यान दीजिए: 2024-25 के आम बजट में सरकार की कुल आमदनी का अनुमान 30,80,274 करोड़ रुपए लगाया गया है। 2019-20 में यह रकम 20,82,589 करोड़ रुपये थी। तो पांच साल में पेट्रोलियम पर टैक्स से सरकार ने उतनी रकम बटोर ली, जो इनमें से किसी एक वर्ष में उसे हुई आमदनी से ज्यादा है। इस दौर में बुनियादी मानव विकास से संबंधित योजनाओं के बजट में कटौती का सिलसिला भी चला है। तो वाजिब सवाल कि है सारी अतिरिक्त आय गई कहां? अब इसी हफ्ते कुछ संकेत संसद में दिए गए एक अन्य आंकड़े पर गौर करे: 2023-24 सरकारी बैंकों ने एक लाख 70 हजार करोड़ रुपए के ऋण माफ कर दिए। पांच साल में ये रकम लगभग नौ लाख करोड़ रुपये बैठती है। इसके अलावा सरकार कह सकती है कि वह इन्फ्रास्ट्रक्चर में पूंजीगत निवेश पर हर साल दस लाख करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च कर रही है। देश में मैनुफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इन्सेंटिव योजना पर भी बड़ी रकम खर्च हुई है। इसके अलावा 2019 में कॉरपोरेट टैक्स में दी गई छूट के कारण सरकार पर लाखों करोड़ रुपये का बोझ पड़ा। बहरहाल, यह प्रश्न अनुत्तरित है कि की सरकार की इन प्राथमिकताओं से आम जन को क्या हासिल हुआ? जिस समय मध्य वर्ग का ह्रास एक आम कथानक बन चुका हो और उद्योग जगत बाजार सिकुड़ने की शिकायत कर रहा हो, तो यह अवश्य पूछा जाएगा कि आम लोगों की जेब से कॉरपोरेट सेक्टर धन ट्रांसफर करने की नीति पर पुनर्विचार करने के लिए सरकार तैयार क्यों नहीं है? कल्पना कीजिए कि सरकार ने पेट्रोलियम की कीमतों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने की नीति पर सचमुच अमल किया होता। तब साढ़े 36 लाख करोड़ रुपये लोगों की जेब में बचते। इतना पैसा उपभोग क्षेत्र में जाता। उससे बाजार को जो बल मिलता, वह बेशक आर्थिक आंकड़ों में झलकता। तो क्या आज की आर्थिक बदहाली की सीधी जिम्मेदारी सरकार पर नहीं जाती है?

# आईएफएफआई एक सार्थक फिल्म महोत्सव बन गया क्योंकि इसने भारतीय सिनेमा के इतिहास को दर्शाया और चार महान प्रतीकों - अक्किनेनी नागेश्वर राव, राज कपूर, मोहम्मद रफी और तपन सिन्हा को श्रद्धांजलि अर्पित की

- सुभाष घई

इस साल का भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आईएफएफआई) पिछले हफ्ते, 28 नवंबर 2024 को संपन्न हुआ। फिल्मों और इससे संबद्ध उद्योग से जुड़ी सभी चीजों के इस भव्य समारोह में, मुख्य आकर्षण भारतीय सिनेमा की चार महान हस्तियों -बहुमुखी अभिनेता अक्किनेनी नागेश्वर राव, महान शोमैन राज कपूर, शाश्वत आवाज मोहम्मद रफी और प्रतिभाशाली कहानीकार तपन सिन्हा - के कार्यों का एक ऐतिहासिक उत्सव था। इन महान दिग्गजों ने अपनी असाधारण प्रतिभा एवं दृष्टिकोण से फिल्म उद्योग को गौरवान्वित किया और एक ऐसा अमिट जादू बिखेरा जिसने फिल्म निर्माताओं, संगीतकारों और दर्शकों की कई पीढ़ियों को समान रूप से प्रेरित किया है। उनकी विरासतें युगों-युगों तक गूंजती रहेंगी। भारतीय सिनेमा के दिग्गज कलाकार राज कपूरएक अभिनेता, निर्देशक, स्टूडियो मालिक और निर्माता के रूप में अपनी बहुमुखी प्रतिभा के लिए जाने जाते थे। उनकी फिल्में अक्सर सामाजिक मुद्दों को हास्य एवंसंवेदना के साथ चित्रित करती थीं, जिससे वे आम आदमी की आवाज बन गए। अपनी मार्मिक कथाओं और गहरी सामाजिक अंतर्दृष्टि के लिए जाने जाने वाले तपन सिन्हा बंगाल के एक निपुण फिल्मकार थे, जिनका काम अक्सर आम लोगों के संघर्षों को उजागर करता था। कलात्मकता को सामाजिक टिप्पणी के साथ मिश्रित करने की उनकी क्षमता ने उनकी फिल्मों को कालजयी बना दिया है। अक्किनेनी नागेश्वर राव, जिन्हें एएनआर के नाम से जाना जाता है, तेलुगु सिनेमा की एक महान हस्ती थे। उन्हें उनकी उल्लेखनीय अनुकूलनशीलता एवंसशक्त अभिनय के लिए जाना जाता है। छह दशकों से अधिक के अपने शानदार करियर मेंउन्होंने अनगिनत अविस्मरणीय भूमिकाएंनिभाईं। सबसे लोकप्रिय भारतीय पार्श्व गायकों में से एक, मोहम्मद रफी अपनी असाधारण आवाज और अभिव्यंजक गायन शैली के लिए प्रसिद्ध रहे। उनके सदाबहार गीतों ने विभिन्न पीढ़ियों और भाषाओं के श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया है। एक फिल्म महोत्सव सही अर्थों में तभी सार्थक बन जाता है, जब वह अपने इतिहास पर गौर करता है और इसकी शुरुआत को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। आईएफएफआई के 55वें संस्करण ने न केवल इन हस्तियों की सिनेमाई उपलब्धियों का उत्सव मनाया, बल्कि फिल्म प्रेमियों की नई पीढ़ी को उनकी विरासत से परिचित कराने के लिए एक मंच के रूप में भी काम किया। उनकी उल्लेखनीय विरासतों के शताब्दी वर्ष को मनाते हुए, इस फिल्म महोत्सव ने सावधानीपूर्वक आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, स्क्रीनिंग और प्रदर्शनों के माध्यम से उनके अद्वितीय योगदानों को सामने रखा। रंगारंग उद्घाटन समारोह के मंच से, शताब्दी मनाने वाले इस महोत्सव ने पहले दिन से ही अपना रंग बिखेरनाशुरू करदिया। एक शक्तिशाली ऑडियो-विजुअल प्रस्तुति में एएनआर, राज कपूर, मोहम्मद रफी और तपन सिन्हा की यात्रा का वर्णन किया गया, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उस यादगार शाम को काव्यात्मक स्पर्श देते हुए, अभिनेता बोमन ईरानी ने प्रत्येक सम्मानित व्यक्ति को समर्पित भावपूर्ण कविताएं सुनाईं, जो भारतीय सिनेमा पर उनके गहरे प्रभाव को रेखांकित करती हैं। इस समारोह का एक अनूठा आकर्षण इन हस्तियों को समर्पित एक विशेष डाक टिकट संग्रह का विमोचन था। इन चार दिग्गजों की प्रतिष्ठित छवियों को प्रदर्शित करने वाले, इस स्मारक डाक टिकट संग्रह ने सिनेमा और संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदानों को अमर बना दिया। बेहद सराहनीय बात यह रही कि इस महोत्सव में इन महान हस्तियों के परिवार के सदस्यों, सहयोगियों और फिल्म उद्योग के दिग्गजों के साथ पैनल चर्चा व बातचीत के सत्र की एक श्रृंखला पेश की गई। इन बातचीतों ने इन दिग्गजों के व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन से जुड़ी अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की। प्रसिद्ध अभिनेत्री खुशबू सुंदर और अक्किनेनी नागेश्वर राव के बेटे एवं अभिनेता नागार्जुन अक्किनेनी ने तेलुगु सिनेमा को आकार देने में इस बहुमुखी कलाकार की अग्रणी भूमिका पर प्रकाश डाला। महान शोमैन के पोते एवं अभिनेता रणबीर कपूर और फिल्म निर्देशक राहुल रवैल ने राज कपूर की विरासत की पड़ताल की तथा भारतीय सिनेमा में उनके प्रेरककार्यों और कला को सामाजिक प्रभाव के साथ जोड़ने की उनकी क्षमता का विश्लेषणकिया। मुझे भारतीय संगीत में रफी के कालातीत योगदान पर विचार करने के लिए प्रसिद्ध पार्श्व कलाकारों अनुराधा पौडवाल एवं सोनू निगम और प्रसिद्ध गायक शाहिद रफी के साथ एक गहनपरिचर्चा में भाग लेने का सौभाग्य मिला। करिश्माई अभिनेत्री शर्मिला टैगोर, अभिनेता अर्जुन चक्रवर्ती और फिल्मों के विद्वान एन मनु चक्रवर्ती ने तपन सिन्हा की कहानी कहने की उत्कृष्ट शैली और बांग्लाव भारतीय सिनेमा पर उनके प्रभाव के बारे में अपने विचार पेश किए। आईएफएफआई टीम ने इन दिग्गज कलाकारों की कलात्मक उत्कृष्टता का उत्सव मनाने के लिए डिजिटल रूप से पुनर्स्थापित फिल्मों की एक विशेष लाइनअप भी खूबसूरती से तैयार की थी। चयनित फिल्मों में देवदासु (अक्किनेनी नागेश्वर राव), आवारा (राज कपूर), हम दोनों (मोहम्मद रफी का संगीत), और हारमोनियम (तपन सिन्हा) शामिल थी। इन फिल्मों के प्रदर्शन ने पुरानी यादों को ताजा कर दिया और पीढ़ियों से चली आ रही उनकी शाश्वत अपील का उत्सव मनाया। 'कारवां ऑफसॉन्स' नाम की एक संगीतमय यात्रा में राज कपूर और मोहम्मद रफी के 150 गीतों के साथ-साथ एएनआर और तपन सिन्हा के 75 गाने प्रदर्शित किए गए। इस संगीतमय श्रद्धांजलि ने भारतीय सिनेमा के समृद्ध साउंडस्केप में उनके बेजोड़ योगदानों पर प्रकाश डाला। इस महोत्सव में 'सफरनामा' नाम की एक प्रभावशाली प्रदर्शनी में इन चारों दिग्गजों के जीवन एवं करियर से जुड़ी दुर्लभ तस्वीरें, यादगार वस्तुएं और कलाकृतियां प्रदर्शित की गईं। एनएफडीसी और केंद्रीय संचार ब्यूरो ने अतीत एवं वर्तमान के बीच के अंतर को पाटते हुए, इन हस्तियों की व्यक्तिगत और व्यावसायिक उपलब्धियों को जनता के सामने लाने का अच्छा काम किया। मनोरंजन के क्षेत्र में क्विज़, डिजिटल शोकेस और इंटरैक्टिव डिस्प्ले जैसी विषयगत गतिविधियां भी आयोजित की गईं। आईएफएफआई ने अपनी उपलब्धियों को रेखांकितकरने वाली द्विभाषी स्मारिका भी तैयार की। यह दुनिया भर से आने वाले प्रतिनिधियों के माध्यम से इन महान हस्तियों की विरासतों को दुनिया भर के दर्शकों तक पहुंचाने की दिशा में एक अच्छा प्रयास है। मीरामार समुद्र तट पर पद्मश्री पुरस्कार विजेता सुदर्शन पटनायक द्वारा बनाया गया एक आकर्षक रेत कला चित्रण इन महान सिनेमाई दिग्गजों के सांस्कृतिक प्रभाव का प्रतीक है। पद्मश्री पुरस्कार विजेता की मनमोहक रेत कला ने समुद्र तट पर जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया और इन चारोंहस्तियों के कालातीत प्रभाव के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके उल्लेखनीय योगदानों को भव्य एवं बेहद सार्थक तरीके से सम्मानित करने और उनके स्थायी प्रभाव को गरिमाएवं श्रद्धा के साथ श्रद्धांजलि देने के सराहनीय प्रयास किए गए हैं। यह समारोहने न केवल उनकी उपलब्धियों का उत्सव मनाया बल्कि भारतीय सिनेमा की उस स्थायी भावना को भी मजबूत किया जिसे इन दिग्गजों ने आकार देने में मदद की। आईएफएफआई ने यह सुनिश्चित किया कि इन सिनेमाई हस्तियों की विरासत भावी कहानीकारों और दूरदर्शी लोगों का मार्ग प्रशस्त करती रहे।

## आलेख

# रैगिंग के खिलाफ कठोर कदम उठाए जाएं

योगेश कुमार गोयल

पिछले दिनों गुजरात के पाटन में एक मेडिकल कॉलेज में रैगिंग के कारण 18 साल के एक छात्र की मौत के बाद उम्मीद जगी थी कि कॉलेजों में रैगिंग के मामलों पर रोक लगेगी लेकिन उसके बाद भी जिस प्रकार आये दिन देश भर से रैगिंग के मामले सामने आ रहे हैं, उन्हें देखते हुए कॉलेजों में रैगिंग को लेकर तत्काल कड़े कदम उठाने की जरूरत महसूस होने लगी है। पाटन मेडिकल कॉलेज में रैगिंग से छात्र की मौत के मामले में खुलासा हुआ है कि 15 सीनियर छात्रों ने उस जूनियर छात्र सहित कई छात्रों से लगातार तीन घंटे डांस करवाया, गाने गवाए और उन्हें शारीरिक-मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। मानसिक-शारीरिक यातना दिए जाने के कारण अनिल मेथानिया आधी रात को बेहोश होकर गिर पड़ा। उसे अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मेडिकल कॉलेज के द्वितीय वर्ष के 15 छात्रों को गैर-इरादतन हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। रैगिंग पर लगाम कसने को लेकर देश भर के तमाम शिक्षण संस्थानों में सख्ती बेहद जरूरी है क्योंकि हर साल ऐसे अनेक मामले सामने आते हैं, जिनमें रैगिंग के शिकार छात्र अवसाद के शिकार हो जाते हैं, कुछ रैगिंग से डर कर पढ़ाई बीच में छोड़ देते हैं, तो कुछ मौत को गले लगा लेते हैं। रैगिंग रोकने के लिए सख्त अदालती दिशा-निर्देश हैं, लेकिन जिस प्रकार रैगिंग के मामले सामने आ रहे हैं, उससे चिंता बढना स्वाभाविक है। हिमाचल के एक मेडिकल कॉलेज में 2009 में रैगिंग से एक छात्र की मौत के बाद सुप्रीम कोर्ट ने देश के शिक्षण संस्थानों में रैगिंग विरोधी कानून सख्ती से लागू करने के आदेश दिए थे, जिसके तहत दोषी पाए जाने वाले छात्र को तीन साल के सश्रम कारावास और आर्थिक दंड का प्रावधान था। दोषी छात्र को कॉलेज तथा हॉस्टल से निलंबित या बर्खास्त किया जा सकता है। उसकी छात्रवृत्ति तथा अन्य सुविधाओं पर रोक, परीक्षा देने या परीक्षा परिणाम घोषित करने पर प्रतिबंध लगाने के अलावा अन्यत्र उसके दाखिले पर भी रोक लगाई जा सकती है। रैगिंग के मामले में कार्रवाई न करने अथवा मामले की अनदेखी करने पर कॉलेज के खिलाफ भी कार्रवाई हो सकती है, जिसमें कॉलेज पर आर्थिक दंड लगाने के अलावा कॉलेज की मान्यता रद्द करने का भी प्रावधान है। अदालत के दिशा-निर्देशों के तहत किसी छात्र के रंग-रूप या उसके पहनावे पर टिप्पणी करके उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाना, उसकी क्षेत्रीयता, भाषा या जाति के आधार पर उसका अपमान करना, उसकी नस्ल या पारिवारिक पृष्ठभूमि पर अभद्र टिप्पणी करना या उससे जबरन किसी प्रकार का अनावश्यक कार्य कराया जाना रैगिंग के दायरे में सम्मिलित किया गया है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा देश के प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान में रैगिंग के खिलाफ एक समिति बनाने से लेकर संबंधित नियमों का पालन नहीं करने पर संस्थान की मान्यता रद्द करने तक के सख्त निर्देश हैं, लेकिन रैगिंग के लगातार सामने आते मामलों को देख कर हैरानी होती है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अरिजीत पसायत, जस्टिस डी. के. जैन तथा जस्टिस मुकुंदकम शर्मा की खंडपीठ ने रैगिंग रोकने के लिए 11 फरवरी, 2009 को पहली बार बेहद कड़ा रुख अपनाते हुए कहा था कि रैगिंग में मानवाधिकार हनन जैसी गंध आती है। खंडपीठ ने राज्य सरकारों और केंद्रशासित प्रदेशों को शिक्षण संस्थानों में रैगिंग पर रोक लगाने के लिए राघवन कमेटी की सिफारिशों को सख्ती से लागू करने का निर्देश देते हुए कहा था कि रैगिंग रोकने में विफल शिक्षण संस्थाओं की मान्यता रद्द करें। 2001 में भी सुप्रीम कोर्ट ने उन्नीकृष्णन समिति की सिफारिश के आधार पर रैगिंग पर प्रतिबंध लगाते हुए इसके लिए कठोर सजा का प्रावधान करते हुए अपने आदेश में स्पष्ट कहा था कि शिक्षा परिसरों में रैगिंग रोकना शिक्षा संस्थानों का नैतिक ही नहीं, कानूनी दायित्व भी है, जिसे न रोक पाना दंडनीय अपराध की श्रेणी में लाया जाएगा और ऐसे संस्थानों की संबद्धता तथा उन्हें प्रदत्त सरकारी वित्तीय सहायता समाप्त की जा सकती है। कोर्ट का स्पष्ट कहना था कि रैगिंग के नाम पर दुर्व्यवहार रोकना कॉलेज प्रबंधन, प्राचार्य,अधिकारियों तथा छात्रावास अधीक्षकों की जिम्मेदारी बनती है। एक विद्यार्थी कितने सपने संजो कर कॉलेज की दहलीज पर पहला कदम रखता है, और उससे भी अधिक उसके माता-पिता या अभिभावकों की आशाएं और अरमान उससे जुड़े होते हैं।

# खाद्य पदार्थों की कीमतें तेजी से बढ़ी.....

प्रो. लल्लन प्रसाद

अक्टूबर, 2024 में महंगाई दर 6.21 प्रतिशत पर पहुंच गई जो पिछले 14 महीने का सबसे ऊंचा स्तर है, यह रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की 4-6त्न की सीमा, जो अर्थव्यवस्था के लिए सुरक्षित मानी जाती है, के ऊपर है, जो चिंता का विषय है। खाद्य पदार्थों की कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं। यह स्थिति ऐसे में है जब अधिकांश खाद्य पदार्थों की पैदावार कम नहीं हुई है। एक अनुमान के अनुसार वितरण की अव्यवस्था के कारण लगभग 20त्न गल्ला उन लोगों तक नहीं पहुंच पाता जिनको उसकी आवश्यकता है। फर्जी राशन कार्ड और राशन कार्ड के दुरुपयोग और काले बाजार में गल्ला बेचने की घटनाएं आम हैं। व्यापारियों और अमीर किसानों द्वारा गल्ले का स्टॉक बढ़ा कर कीमतों को प्रभावित करने पर सरकारी नियंत्रण कमजोर है। तेजी से बढ़ती आबादी के कारण खाद्य पदार्थों की मांग भी बढ़ रही है। इसमें संदेह नहीं किंतु कीमतें उससे भी अधिक तेजी से बढ़ रही हैं। कुछ खाद्य पदाथरे की मांग-पूर्ति में बड़ा अंतर है, जिसके कारण उनकी कीमतों पर लगाम लगाना सरकार के लिए मुश्किल हो रहा है जैसे दालें, मौसमी सब्जियां, फल आदि। शाकाहारी लोगों की थालियां ही महंगी नहीं हुई हैं, वे लोग भी जो मांस, मछली, चिकन आदि का सेवन करते हैं, बढ़ती कीमतों से त्रस्त हैं। खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त रोजमर्रा के उपयोग की चीजें-घी, तेल, साबुन, मसाले और किराने के अधिकांश सामान महंगे होते जा रहे हैं, जो लोगों की जेब पर भारी पड़ रहे हैं। कीमतों में वृद्धि के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यालय मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार भारत की उपभोक्ता मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति सितम्बर, 2024 में बढ़ कर 5.4 9त्न हो गई। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए मुद्रास्फीति दर क्रमश- 5.87त्न और 5.05त्न थी। अक्टूबर के आंकड़े और भी निराशाजनक थे, महंगाई दर 6.21त्नपर पहुंच गई, ग्रामीण क्षेत्रों के लिए यह 6.68त्न और शहरी क्षेत्रों के लिए 5.62त्न थी। शहर वालों की अपेक्षा गांव के लोगों पर महंगाई की मार अधिक देखी गई। रिजर्व बैंक ने महंगाई की इस स्थिति का संज्ञान लेते हुए अल्पकालीन ऋण दर को बदलने से मना कर दिया और सरकार को सुनिश्चित करने को कहा कि मुद्रास्फीति मार्जिन को चार प्रतिशत पर लाने की कोशिश करे। गेहूं की कीमत पिछले कुछ वर्षो से लगातार तेजी से ऊपर जा रही हैं। 2010 में गेहूं की औसत कीमत 1100 रुपये प्रति क्विंटल थी जो 2015-16 में 1450 पर आ गई, अक्टूबर, 2024 में यह 2700 के ऊपर पहुंच गई। किसानों को इसका लाभ मिला किंतु उतना नहीं जितना अपेक्षित था क्योंकि इनपुट कीमतें खाद, बीज, डीजल, भाड़ा, श्रम, सभी महंगे होते गए। सरकार ने 2024-25 के लिए गेहूं की न्यूनतम खरीद दर 2425 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित की जिसे किसान बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। आम उपभोक्ता गेहूं की बढ़ती कीमतों से त्रस्त हैं। गरीबी में आटा गीला की कहावत चरितार्थ हो रही है। दालें शाकाहारी खाने में प्रोटीन की मुख्य स्रोत हैं, उनकी कीमतें पिछले कई वर्षो से लगातार बढ़ती जा रही हैं। 2020 में अरहर की दाल 80 रुपये प्रति किलो थी जो अब 180 प्रति किलो के लगभग है। अधिकांश दालों की खुदरा कीमत बाजार में 100 रुपये प्रति किलो के ऊपर है। दुनिया के दालों के कुल उत्पादन में भारत का हिस्सा 25त्न है, किंतु यह मांग से कम है, आयात की आवश्यकता पड़ती है। सब्जियों की कीमतें तो मौसम के अधीन रहती हैं, जिन पर जलवायु परिवर्तन का असर बराबर देखा जा रहा है। पिछले कुछ महीनों से टमाटर, आलू, प्याज आदि की कीमतें आसमान छू रही हैं। आटा, दाल, सब्जी और मसालों की कीमतों में लगातार बढ़त घर के खाने की थाली दिनोंदिन महंगी करती जा रही है, औसतन 10त्न प्रति वर्ष से अधिक की वृद्धि हो रही है। ढाबों से लेकर रेस्टोरेंट, होटल सभी में खाना महंगा होता जा रहा है। मांस, मछली, चिकन, अंडे की कीमतों में भी लगातार वृद्धि हो रही है। दूध उत्पादन में विगत वर्षो में अच्छी वृद्धि हुई है किंतु साथ ही कीमतें भी बढ़ी हैं। 2018-19 में भारत में दूध का उत्पादन 180 मिलियन टन के लगभग था जो 2023-24 में बढ़ कर 240 मिलियन के ऊपर पहुंच गया। इस बीच, दूध की सभी बड़ी कंपनियों ने कई बार कीमतों में वृद्धि की। देसी घी, खोवा और उनसे बनने वाली मिठाइयों की कीमतें भी बढ़ती जा रही हैं। खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त रसोई गैस, पेट्रोल, डीजल, सोना-चांदी, आभूषणों, प्रसाधन के सामानों आदि की कीमतों में उतार-चढ़ाव भी आम आदमी को प्रभावित करता है। 2020 में 14.2 केजी रसोई गैस सिलेंडर की कीमत सब्सिडी बिना 590 रुपये के लगभग थी, जो 2019 में 680 हो गई और वर्तमान में 800 के करीब है, विभिन्न राज्यों में कीमतों में कुछ अंतर है क्योंकि टैक्स की दरें एक सी नहीं हैं। पेट्रोल-डीजल कीमतों में भी इसी कारण राज्यों में अंतर है। इनकी कीमतें अंतरराष्ट्रीय कीमतों पर निर्भर करती हैं, जिनमें उतार-चढ़ाव होते रहते हैं। इनकी कीमतों में बढ़त पूरी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है, चीजों को महंगी कर देती है क्योंकि ट्रांसपोर्ट का खर्च बढ़ जाता है, किराया भाड़ा महंगा हो जाता है। रेल, रोड, हवाई यातायात सभी महंगे हो जाते हैं। पांच वर्षो पूर्व दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 60 रुपये प्रति लीटर थी जो आज 95 के लगभग है। सोने की खपत विश्व में सबसे ज्यादा भारत में है। 2020 में 10 ग्राम 24 कैरट सोने का दाम 48600 रुपये था जो इस समय 74000 के करीब है। महंगाई वैश्विक समस्या है। सिर्फ भारत की नहीं है। महंगाई के मामले में भारत विश्व में दसवें स्थान पर है। कहावत है कि अर्थशास्त्र का इतिहास महंगाई का इतिहास है। इसमें कोई संदेह नहीं। हर व्यक्ति अपने जीवन में यह महसूस करता है। चाहे किसी भी देश का हो। पिछले कुछ वर्षो में भारत में महंगाई की अधिकतम दर 13.9त्न, 1991 में दर्ज की गई थी।

# एक साल बेमिसाल-मोहन का उद्योग-जाल

लेखक-सत्येंद्र जैन

मध्य प्रदेश में महाराजा विक्रमादित्य की भाँति परम प्रतापी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के कार्यकाल का पहला साल पूर्ण हुआ है। उद्यमशीलता के पर्याय यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव मध्य प्रदेश में निवेश और उद्यमों को संवर्धित करने के लिए सर्वस्व उद्यम अर्पण कर रहे हैं । एक समय वर्ष 2003 में प्रदेश की औद्योगिक विकास दर माइनस में थी।भाजपा की शिवराज सिंह चौहान , उमा भारती और स्वर्गीय बाबूलाल गौर की सरकार के परिश्रम और उद्योग हितैषी नीतियों के माध्यम से आज प्रदेश की औद्योगिक विकास दर लगभग 24 प्रतिशत है।मध्य प्रदेश में औद्योगिक निवेश विकास के पथ पर सरपट दौड़ रहा है।आज मध्य प्रदेश में औद्योगिक निवेश लगभग 4 लाख करोड़ रुपए है।आज औद्योगिक क्षेत्र भी सैकड़ों हैं ।भाजपा की मोहन सरकार का भविष्य में इस निवेश को 20 लाख करोड़ रुपए तक ले जाने का संकल्प है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने गहन अनुसंधान कर मध्य प्रदेश के विकास के रोडमैप को, ब्लू प्रिंट को तैयार किया है।यह भलीभांति अनुभव किया है कि प्रदेश के तीव्र आर्थिक विकास के लिए उद्योगों को,व्यापार वाणिज्य को बढ़ावा देना आवश्यक है । उद्यम क्षेत्र में अपार संभावनाएं विद्यमान हैं।इनका समुचित दोहन कर अर्थव्यवस्था को, औद्योगिक विकास को तीव्र गति प्रदान करेगा।यही कारण है कि उद्यमी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव,प्रदेश में उद्योगों का जाल बिछाने के लिए संकल्पित हैं । प्रदेश को औद्योगिक हब बनाने के लिये यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने पहली बार संभाग स्तर पर रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के साथ ही देश के बड़े महानगरों में रोड-शो किए।विदेशों से भी उद्योगपतियों को आकर्षित कर निवेश लाने की पहल की। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के इन प्रयासों से मध्यप्रदेश आर्थिक रूप से सशक्त होगा और युवाओं को रोजगार के अधिकतम अवसर मिलेंगे । मध्यप्रदेश को औद्योगिक हब,मैन्युफैक्चरिंग केंद्र बनाने और रोजगार के अवसर सृजित करना मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की सर्वोच्च प्राथमिकता है । प्रदेश में हुई रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव उज्जैन, ग्वालियर, रीवा, जबलपुर, सागर और देश के महानगर मुंबई, कोयंबटूर, बैंगलुरू और कोलकाता में हुए रोड-शो से 2,76,070 करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए । इससे 3,28,670 रोजगार सृजन होगा । मध्यप्रदेश में निवेश लाने के लिये डॉ मोहन यादव हर जगह जाने को तैयार हैं। चाहे वह देश के अंदर हो या देश के बाहर हो। उनका प्रयास है कि मध्यप्रदेश आर्थिक रूप से सबल हो और देश की अर्थव्यवस्था में महती भूमिका निभाए । आज भारत दुनिया की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था में मध्य प्रदेश महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।देश की जीडीपी में योगदान 3.5 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 5 प्रतिशत हो गया है। भाजपा की मोहन सरकार देश की पाँच ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था में 550 बिलियन डॉलर के योगदान की लक्ष्य पूर्ति हेतु संकल्पित है । मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की यूके और जर्मनी यात्रा के दौरान विभिन्न सत्रों, वन-टू-वन मीटिंग्स और राउंड-टेबल मीटिंग्स में चर्चा के अनुसार लगभग 78,000 करोड़ रूपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं । नर्मदापुरम में रि?जनल इंडस्?ट्री कॉन्क्लेव से 31,800 करोड से निवेश प्रस्?ताव मिले जिससे 40 हजार रोजगार मिलेंगे । मोहन सरकार को प्रदेश में औद्योगिक निवेश हेतु लगभग 4.5 लाख करोड़ रुपए के निवेश के प्रस्ताव उद्यमियों से प्राप्त हुए हैं।वह दिन दूर नहीं जब मध्य प्रदेश का औद्योगिक निवेश वर्तमान में लगभग 4 लाख करोड़ रुपए है,बढ़कर शीघ्र ही दस लाख करोड़ होगा । खनिज क्षेत्र में भी राजस्व वर्तमान में 10 हजार करोड़ रुपए से 50 हजार करोड़ रुपए अर्जित करने के लिए संकल्पित हैं।विभिन्न प्रकार की औद्योगिक सब्सिडी भी उद्योगों को प्रदान की जा रही हैं । मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के औद्योगिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्री चेतन कश्यप भी कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग कर रहे हैं । कुशल प्रशासक महाराजा विक्रमादित्य की भाँति यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै: अर्थात परिश्रम से कार्य सिद्ध होते हैं, मनोरथ से नहीं इस मंत्र को आत्मसात कर मध्य प्रदेश में उद्योगों का जाल बिछा ,समृद्धि और सुख के सहस्रों प्रवेशद्वार खोल रहे हैं ।भाजपा सरकार के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव को एक साल बेमिसाल की हार्दिक बधाई।आप जनकल्याण क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान गढ़ते जाएं ।

## वरिष्ठतम समाजसेवी, चिंतक संपादक बाबू चंपालाल जी जैन को पत्रकार भवन में दी गई श्रद्धांजलि

**झांसी (विश्व परिवार)।** पत्रकार भवन, झांसी में आज श्री गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता उन्नयन समिति द्वारा शहर के वरिष्ठतम वयोवृद्ध संपादक, दैनिक लोकपथ के संस्थापक श्री चंपालाल जी जैन के 97 वर्ष की आयु में देहावसान पर शोक सभा का आयोजन किया गया।

सभा में वक्ताओं ने श्री चंपालाल जैन जी के द्वारा पत्रकारिता, लेखन, सृजन एवं समाज सेवा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

सभा की अध्यक्षता पत्रकार भवन के अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार जैन (विश्व परिवार) ने की। उन्होंने कहां की बाबूजी का देहावसान समाज सेवा एवं पत्रकारिता जगत के एक युग का समापन है।

शोकसभा में गांधीवादी विचारक श्री सुरेंद्र सक्सेना, डॉ मनमोहन मनु, श्री हरिकृष्ण चतुर्वेदी, श्री सुदर्शन शिवहरे, श्री मदन बबेले एड., श्री योगेंद्र शर्मा, श्री रिपु सूदन नामदेव, श्री देवेंद्र भारद्वाज, श्री देवेंद्र शुक्ला, श्री हरीश कुमार वीरू, सुश्री साजिया खान, श्री फारुख खान श्री सुरेश तिवारी, श्री रघुवीर शर्मा, श्री अनंजय नेपाली, श्री राजीव श्रीवास्तव, श्री मुकेश त्रिपाठी, श्री वंश कुमारआदि ने श्री कीर्ति शेष श्री चंपालाल जी जैन के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर अपनी भावांजलि व्यक्त की संस्मरण सुनाए।

शोकसभा में इ. मीडिया के पत्रकार श्री एस एस झा एवं वरिष्ठ अधिवक्ता समाजसेवी श्री भीम प्रकाश त्रिपाठी को भी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शोकसभा का संचालन समिति के महामंत्री श्री पंकज सक्सेना ने किया।

## संयम पुरुषोत्तम युग पुरुष चर्या शिरोमणी आध्यात्मिक दिगंबर जैन आचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज : मुनि श्री प्रणव सागर जी महाराज

**मिरज/महाराष्ट्र (विश्व परिवार)।** जयदु जिणिंदो महावीरों। चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज के शिष्य श्रमण मुनी श्री अनुत्तर सागर जी महाराज, श्रमण मुनी श्री प्रणेय सागर जी, श्रमण मुनी श्री प्रणव सागर जी, श्रमण मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी, श्रमण मुनी श्री संकल्प सागर जी और श्रमण मुनी श्री सदभाव सागर जी महाराज जी का उपसंघ मिरज (महाराष्ट्र) में विराजमान हैं। हम बात कर रहे है एक महान व्यक्तीत्व की जिन्होने अपना सारा जीवन जैन धर्म की प्रभावना के लिए, जैन धर्म की रक्षा के लिए, पुरी जैन समाज को, पुरे जैन साधूओं को एक करने के लिए और अपनी आत्मसाधना के लिए समर्पित कर दिया है। हम आज अपने हृदय की गहराईयो से जिनको विनयांजली दे रहे है। उनका नाम भारत में ही नही वे पुरे विश्व में प्रसिद्ध है। उनका नाम है संयम पुरुषोत्तम, युग पुरुष चर्या शिरोमणी आध्यात्मिक दिगंबर जैनाचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज।

एक संत जो अपने विरोधीयों का भी विरोध नही करते। एक आचार्य जिनकी दिन की सुरुवात जिनागम के सूत्रो से होती है और दिन का अंत पुर्वाचार्यों के स्मरण से होता है। एक साधु जो अपने चर्या से सभी को मोहित कर लेते हैं। ना किसी को तिलक लगाते है। ना ही किसी के हाथो में कलावा बांधते है। फिर भी अपनी सौम्यता से, सरलता से और सहजता से हर किसी को अपना बना लेता है। ये आज महानता के उच्च शिखर पर पहूँच चुके है। आप जानते है ये महान कैसे बने। ये इसलिये महान नही है कि, इन्होने 17 वर्ष में कि अल्प उम्र में दिक्षा ली। इसलिए भी नही कि ये आचार्य बने और पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी ने अपना पट्टाचार्य इन को बनाया।

ये इसलिए भी महान नही है कि इनके देश - विदेश में लाखो भक्त है। इसलिए भी नही कि समाज ने विद्वानो ने, भट्टारको ने, मुनीयो ने, आचार्यो ने इनको कई उपाधीयां दी। फिर भी ये महान है क्योंकी इन्होने अपने गुरू के प्रति विनय, आस्था, श्रद्धा, भक्ती जैसी पहले दिन थी वैसी ही आज 34 साल कई दिक्षा में भी है और उससे ज्यादा ही है। इसलिये ये महान है।

इतने बड़े आचार्य बनने पर भी और इतने शिष्य होने पर भी किंचित भी अहंकार नही है। इसलिए ये महान है। जहाँ दुसरे अन्य संघ के साधूओं को देखकर छुप जाते है, रास्ता बदल देते है। वही ये ऐसे आचार्य है जो इस भारत की भूमि पर जितने साधु है, उपाध्याय है, आचार्य है सबसे वात्सल्य से मिलते है। नमोस्तु, प्रति नमोस्तु करते है इसलिए ये महान है। अमीर में, गरीब में, छोटो में, बडो में, बच्चो में, बुढो में, जवानो में, कोई भेदभाव नही रखते। सबको समान स्थान देते है। इसलिए ये महान है।

दिन में चाहे 40 कि . मी. ही क्यों ना चलना हो, पैर में छाले पड जावे या स्वास्थ्य कितना भी खराब हो जाये, कभी भी स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, सामायिक, छठ आवश्यक नही छोडते। इसलिए ये महान है। गांवो, शहारो में विहार करते हुए भी अपनी आत्मा से बाहर विहार नही करते। चार रसों का आजीवन त्याग करके रुखा, सुखा भोजन करते है। फिर भी आत्मरस का आनंद लेते है। इसलिए वे महान है। ये कोई तीर्थ, मंदिर, भवन नही बनवाते, बस आत्मभवन में ही निवास करते है। इसलिए ये महान है।

आचार्य श्री जी ने अभी तक लागभग 150 पंचकल्याणक करा दिये। लेकिन आज तक अपने नाम पर एक कमरा भी नही बनवाया। जो सदा जिनवाणी माँ के गोद में रहते है, हर क्षण आत्मा का शोध करते है और समाज को सत्यार्थ बोध देते है। इन्होने 200 से ज्यादा ग्रंथ लिख दिये। लेकिन आगम के विरुद्ध एक भी शब्द ना लिखते है, ना हि बोलते है। वस्तुत्व महाकाव्य जैसे महान काव्यग्रंथ कि रचना कि तथा समाज के श्रावकों को बोधी प्राप्त हो इसलिए सत्यार्थ बिध जैसे ग्रंथ अपने हाथो से लिखे है। -**अभिषेक अशोक पाटील**

## संक्षिप्त समाचार

### भामाशाह श्रीमती सुशीला पाटनी आरके मार्बल ने स्वस्तिधाम तीर्थ के दर्शन किए एवं गुरु मां स्वस्ति भूषण माता जी का लिया आशीर्वाद

**जहाजपुर (विश्व परिवार)।** मंगलवार की प्रात: बेला में श्रीमती सुशीला पाटनी आरके मार्बल ग्रुप ने स्वस्तिधाम तीर्थ पहुंचकर बाबा की प्रतिमा के दर्शन किए एवं क्षेत्र के दर्शन किए दर्शन उपरांत उन्होंने भारत गौरव गणिनी आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण माताजी के दर्शन किए एवं उनका आशीर्वाद लिया साथ में उन्होंने माताजी के सानिध्य में समयसार ग्रंथ का स्वाध्याय भी किया और पुण्य लाभ प्राप्त किया। उन्होंने स्वयं माताजी का चोका लगाकर माताजी की आहारचर्या वह चरण वंदना का पुण्य लाभ भी प्राप्त किया। उनके साथ उनका मित्र मंडल भी सम्मिलित रहा इस अवसर पर उनका स्वागत अभिनंदन किया गया साथ ही उन्हें भगवान मुनिसुव्रतनाथ की तस्वीर भी भेंट की गई। श्रीमती पाटनी क्षेत्र की वंदना कर काफी गदगद दिखाई दी। और क्षेत्र की व्यवस्थाओं की सराहना की। -**अभिषेक जैन लुहाड़िया**

### पंडित सुंदरलाल शर्मा विश्वविश्वविद्यालय के कुलपति की सुपौत्री मान्या श्री शर्मा कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट में रही अव्वल

**लॉ एडमिशन टेस्ट (CLAT) 2024 में छत्तीसगढ़ में दूसरे स्थान पर**

**जशपुर (विश्व परिवार)।** पंडित सुंदर लाल शर्मा विश्व विश्वविद्यालय के कुलपति कि सुपौत्री मान्या श्री शर्मा कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट में रही अव्वल। वह लॉ एडमिशन टेस्ट (CLAT) 2025 में छत्तीसगढ़ में दुसरे स्थान पर सफलता प्राप्त कर क्षेत्र व प्रदेश का नाम रोशन किया हैं। ज्ञात हो कि मान्या श्री नें क्लेट में ऑल इंडिया रैंक 534,ऑल, इंडिया वूमेन रैंक 254, छत्तीसगढ़ स्टेट रैंक 7,छत्तीसगढ़ स्टेट वूमेन रैंक 2 प्राप्त करनें में सफलता पायी है। मान्या श्री प्रारंभ से ही मेधावी छात्र रहीं है। उनका आगामी लक्ष्य यू.पी.एस.सी. के माध्यम से केन्द्रीय सेवा में जानें का है। मान्या श्री शर्मा पं.सुंदर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ . टी .टी.डी.शर्मा की सुपौत्री एवं समर्पित संस्था के अध्यक्ष डॉ. संदीप शर्मा व डॉ.नीति शर्मा की सुपुत्री है। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता पिता व शिक्षकों को दिया हैं।

### जिले के 13 महिला स्व सहायता समूहों सहित 1 विधवा हितग्राही के लिए 11 लाख रुपए से अधिक की हुई स्वीकृति

**बलौदाबाजार (विश्व परिवार)।** कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देश पर महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा महिलाओं को सशक्तिकरण बनाने के लिए राज्य शासन द्वारा संचालित छत्तीसगढ़ महिला कोष ऋण योजनांतर्गत छत्तीसगढ़ महिला कोष ऋण योजनांतर्गत 13 महिला स्वसहायता समूहो एवं सक्षम योजनांतर्गत 01 विधवा महिला हितग्राहीं के आवेदनों पर परीक्षण उपरान्त 11 लाख 70 हजार रूपये राशि स्वीकृति प्रदान की गई है। स्वसहायता समूह द्वारा विभिन्न कार्य जो पूर्व से संचालित है। समूह को आत्मनिर्भर एवं उनके व्यवसाय को गति देने विस्तार करने के उद्देश्य से राशि ऋण स्वीकृत की गई है तथा सक्षम योजनांतर्गत विधवा/परित्यक्त महिला हितग्राहियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से शासन के महत्वकांक्षी योजना 'सक्षम' अंतर्गत 01 विधवा महिला हितग्राहियों को बुटिक एवं सिलाई, पापड़ (साबुनदाना, मुरूकु, बिजौरी), किराना दुकान, टिफिन सेंटर, निरमा पाउडर, फैंसी स्टोर्स, सब्जी भाजी उत्पादन कार्य एवं अन्य कार्यो हेतु राशि स्वीकृत की गई है। शासन द्वारा योजनांतर्गत 3 प्रतिशत साधारण ब्याज पर ऋण दी जायेगी तथा इसे समूहों द्वारा 24 से 36 मासिक किश्तों व सक्षम योजनांतर्गत महिला हितग्राहियों द्वारा 60 किश्तो में राशि वापस किया जायेगा। उक्त लाभान्वित स्व-सहायता समूहो में जय मां शीतला स्वसहायता समूह मल्दा 1 लाख रूपये आदि स्वीकृत की गई है।

## पंचकल्याणक महा महोत्सव में गर्भ कल्याणक की क्रियाएं सम्पन्न की गई

**जतारा (विश्व परिवार)।** परम पूज्य श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्श सागर जी महाराज की जन्म नगरी श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र आदिश्वर धाम जतारा के समीपस्थ ग्राम माची में चर्या शिरोमणि आचार्य भगवान 108 श्री विशुद्ध सागर जी महा मुनिराज के आज्ञानुवर्ती प्रिय शिष्य द्वय 108 श्री सुप्रभ सागर जी महाराज 108 श्री प्रणत सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में दिनांक 10 दिसंबर से 15 दिसंबर तक श्री चंद्रप्रभ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ।

भारतीय जैन संगठन तहसील अध्यक्ष एवं जतारा जैन समाज उपाध्यक्ष अशोक कुमार जैन ने बताया कि 10 दिसंबर को श्री दिगंबर क्षेत्र अतिशय क्षेत्र आदिश्वर धाम जतारा से दोपहर कालीन बेला में भव्य घट यात्रा प्रारंभ हुई। भव्य शोभायात्रा जतारा के मुख्य मार्गो से होते हुए प्रतिष्ठा महोत्सव ग्राम माची पहुंची, जहां पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य द्वारा विधिवत कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। 11 दिसंबर को तीर्थंकर बालक के गर्भकल्याणक महोत्सव की क्रियाएं संपन्न की गई, माता की गोद भराई कार्यक्रम पूर्ण भव्यता से संपन्न हुआ।

ग्राम माची के ऐतिहासिक कार्यक्रम में तीर्थंकर बालक की माता, की गोद भराई के अवसर पर रविंद्र सिंह गौर पूर्व जनपद अध्यक्ष पलेरा उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जतारा जैन समाज अध्यक्ष महेंद्र जैन टानगा, वीरेंद्र ठेकेदार, राजेंद्र राज, आलोक भार्गव, डॉ रोहित जैन, लल्लू थनवारा ललितपुर, धीरेंद्र जैन, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के समस्त सदस्यों सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। आज संपन्न होगा तीर्थंकर बालक का का जन्म कल्याणक महोत्सव।

आज तीर्थंकर बालक के जन्म की मांगलिक क्रियाओं उपरांत तीर्थंकर बालक के जन्म के बाद सोधर्म इंद्र द्वारा तीर्थंकर बालक को सुमेरु पर्वत पर ले जाकर 1008 कलशो से जन्माभिषेक की मांगलिक क्रियाएं संपन्न की जाएंगी, रात्रि कालीन वेला में बाहर से पधारे कलाकारों द्वारा तीर्थंकर बालक की बाल क्रीड़ा का मंचन संपन्न किया जाएगा।

## ऐसा पंचकल्याणक आज तक नहीं देखा होगा

### 11 से 16 दिसम्बर तक हो रहा है दिल्ली में पंचकल्याणक महामहोत्सव

**दिल्ली (विश्व परिवार)।** देश, समाज, संस्कृति और युवा शक्ति को अपने मौलिक अवदानों से सम्प्रेरित करनेवाले, जीवन है पानी की बूंदे महाकाव्य के मूल रचियता, परम पूज्य भावलिंगी संत राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज (ससंघ -37 पीछी) के सानिध्य में राजधानी दिल्ली के कृष्णानगर स्थित श्री 1008 महावीर जिनालय में हो रहा है 1008 श्रीमज्जि नेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव।

11 से 16 दिसम्बर 2024 तक हो रहा है पंचकल्याणक महोत्सव कणाचार्य- श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज के 42 वें मुनिदीक्षा दिवस 09 दिसम्बर 2024 को मात्र एक जिनबिम्ब के लघुपंचकल्याणक हेतु पात्रों का चयन किया जा रहा था। श्रदालु भक्तसमूह का उत्साह उमंग देखते हुए चंद पलों में ही लघु पंचकल्याणक ने ही बृहद् पंच कल्याणक का रूप ले लिया। आचार्य श्री के मंगल आशीर्वाद एवं मंदिर समिति के निर्णय अनुसार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 11 दिसम्बर से 16 दिसम्बर तक ष्ठ..क्र हेडगवार भवन में सम्पन्न हो रहा है।

14 दिसम्बर को दीक्षा कल्याणक के दिन मनाया जाएगा भावलिंगी संत का 27 वाँ सुनि दीक्षा दिवस एवं रजत विमर्श संयमोत्सव का समापन जिनागम पंथ-प्रवर्तक भावलिंगी संत आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी मुनिराज के व्याधना काल में मुनि दीक्षा के 26 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं साथ ही विगत दो वर्षों से चला आ रहा है रजत विमर्शसंयमोत्सव वर्ष 2022-24 भी 14 दिसमार 2024 को 27 वें मुनिदीक्षा महोत्सव के साथ श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव के मध्य दीक्षा कल्याणक के दिन सम्पन्न होगा। जिसमें देशभर से अनेकानेक श्रद्धालु भक्त गण आयोजन में उपस्थित होकर स्व-जीवन में संयम की सुगंध भरेंगे।

आचार्य श्री ने कहा- ऐसा पंचकल्याणक आज तक नहीं देखा- पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के सभी पात्रों को मंगल आशीर्वाद देते हुए आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ने कहा- मैंने भी अनेक पंचकल्याणक देखे हैं, कराए हैं लेकिन ऐसा पंचकल्याणक नहीं देखा जो मात्र दो दिन में ही शुरू हो गया है। ये सब परमपूज्य आचार्य गुरुदेव विरागसागर जी महामुनिराज का आशीर्वाद है जो उनके 42 वे दीक्षा दिवस पर यह वृहद पंचकल्याणक होना तय हुआ है। इस पंचकल्पावक की एक और विशेषता यह है कि इसमें जितने भी पात्र बने हैं वे सब ही अपनी उम्र से युवा हैं, खासकर माता-पिता ओ अक्सर वृद्धावस्था में ही बनते हैं। मेरा सभी सु-पात्रों के लिए मंगल-मंगल आशीर्वाद है।

## उपराष्ट्रपति के खिलाफ इंडिया गठबंधन का अविश्वास प्रस्ताव

### स्कूल हेड मास्टर की तरह व्यवहार करने का आरोप लगाया मल्लिकार्जुन खड़गे ने

**नई दिल्ली (विश्व परिवार)।** विपक्षी गठबंधन I.N.D.I.A के साथी दल उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए हैं। विपक्ष का आरोप है कि धनखड़ द्वारा अत्यंत पक्षपातपूर्ण तरीके से राज्यसभा की कार्रवाई संचालित करने के कारण यह कदम उठाना पड़ा है। वह सरकार के प्रवक्ता के तौर पर काम कर रहे हैं।

राज्य सभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर INDIA ब्लॉक ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- सभापति राज्यसभा में स्कूल के हेडमास्टर की तरह व्यवहार करते हैं। विपक्ष का सांसद 5 मिनट भाषण दे तो वे उस पर 10 मिनट तक टिप्पणी करते हैं।

सभापति सदन के अंदर प्रतिपक्ष के नेताओं को अपने विरोधी के तौर पर देखते हैं। सीनियर-जूनियर कोई भी हो, विपक्षी नेताओं पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर अपमानित करते हैं। उनके व्यवहार के कारण हम अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए मजबूर हुए हैं।

**खड़गे ने अविश्वास प्रस्ताव लाने के 4 कारण बताए :** सदन में एक्सपीरियंस्ड नेता हैं, जर्नलिस्ट हैं, लेखक हैं, प्रोफेसर हैं। कई फील्ड में काम कर सदन में आए हैं। 40-40 साल का अनुभव रहा है, ऐसे नेताओं को भी सभापति प्रवचन सुनाते हैं।

आमतौर पर विपक्ष चेयर से प्रोटेक्शन मांगता है, अगर सभापति ही प्रधानमंत्री और सत्तापक्ष का गुणगान कर रहा हो तो विपक्ष की कौन सुनेगा। 3 साल में धनखड़ का आचरण पद की गरिमा के विपरीत रहा है। कभी सरकार की तारीफ के कसीदे पढ़ते हैं, कभी खुद को ऋस्र का एकलव्य बताते हैं। ऐसी बयानबाजी उनके पद को शोभा नहीं देती। जब भी विपक्ष सवाल पूछता है तो मंत्रियों से पहले चेयरमैन खुद सरकार की ढाल बनकर खड़े होते हैं। उनके खिलाफ हमारी कोई निजी दुश्मनी, द्वेष या राजनीतिक लड़ाई नहीं है। देश के नागरिकों को हम विनम्रता से बताना चाहते हैं कि हमने सोच-विचारकर संविधान और लोकतंत्र को बचाने के लिए मजबूरी में ये कदम उठाया है। -**कमल नयन नारंग**

## विकासखंड शिक्षा अधिकारी एम.आर. यादव ने स्कूल का अवलोकन कर बच्चों को किया मोटिवेट

### शिक्षकों को विद्यालय में बच्चो की उपस्थिति बढ़ाने का दिया निर्देश, बेहतर रिजल्ट देने का किया वादा

**जशपुर/बगीचा (विश्व परिवार)।** विकासखंड शिक्षा अधिकारी बगीचा एम.आर.यादव के द्वारा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महादेवडांड पहुंचकर पिछले परीक्षा पर परिणाम की विषय वार समीक्षा की गई। परीक्षा परिणाम के संबंध में प्रत्येक शिक्षक शिक्षिकाओं से बातचीत कर उनकी समस्याओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई और आगे परीक्षा परिणाम को बेहतर कैसे किया जा सकता है, इस विषय पर सभी शिक्षकों के साथ मिलकर रणनीति तैयार की गई। इनके द्वारा कक्षा दसवीं के दोनों सेक्शन में जाकर बच्चों को मेरिट में आने के लिए मोटिवेट किया गया और विषय वार तैयारी किस प्रकार करना चाहिए ताकि बच्चे मेरिट में अपना स्थान बना सके।

विकासखंड शिक्षा अधिकारी ने शिक्षकों को विद्यालय में बच्चो की उपस्थिति बढ़ाने का निर्देश दिया और अनियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित रहने वाले बच्चों के पालकों से संपर्क करने को कहा। उन्होंने कहा कि यशस्वी जशपुर कार्यक्रम के तहत दिए गए निर्देशों का पूर्णत: पालन विद्यालय में किया जाए।

#### बच्चों को दिए टिप्स

विकासखंड शिक्षा अधिकारी कक्षा 12वीं में बच्चों से भेंट कर उनके अध्यायन के विषय में विस्तृत चर्चा की गई सभी बच्चों ने बताया कि कोर्स पूरा हो गया है उनके द्वारा रिवीजन का कार्य किया जा रहा है। प्रत्येक दिवस अपने समय का समय बाद सदुपयोग करने की प्रेरणा बच्चों को दी गई। सभी स्टाफ के द्वारा खराब परीक्षा परिणाम को स्वीकारते हुए दुगने उत्साह से मेहनत कर छमाही परीक्षा में 100त्न परिणाम देने का वादा विकासखंड शिक्षा अधिकारी से किया गया।

## वरिष्ठ पत्रकार अमित गौतम छ.ग. जर्नलिस्ट वेलफेयर यूनियन के पुन: प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित

### नेता प्रतिपक्ष महंत ने कहा- सभी पत्रकार साथियों की समस्याओं को ईमानदारी से पहुंचाऊंगा शासन तक

**रायपुर (विश्व परिवार)।** जांजगीर चांपा जिला मुख्यालय के ऑडिटोरियम में छत्तीसगढ़ जर्नलिस्ट वेलफेयर यूनियन का राज्य स्तरीय पत्रकार सम्मेलन एवं त्रिवार्षिक चुनाव आम सभा का आयोजन किया गया। सम्मेलन का शुभारंभ वीणा वादिनि मां सरस्वती के तैलचित्र पर दीप प्रज्वलन कर एवं माल्यार्पण के साथ हुआ, तत्पश्चात राज्य स्तरीय पत्रकार सम्मेलन में छत्तीसगढ़ प्रदेश के लगभग 25 जिलों से यूनियन के पदाधिकारी सदस्य पहुंचे तो वहीं इस कार्यक्रम का आयोजन यूनियन की जांजगीर-चांपा जिला इकाई के आतिथ्य में एवं जिला अध्यक्ष राजू शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया था।

सम्मेलन के इस कार्यक्रम के दौरान मंच पर छ ग जर्नलिस्ट वेलफेयर यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष अमित गौतम, छत्तीसगढ़ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष डॉ चरण दास महंत,जांजगीर चांपा के विधायक व्यास कश्यप, पामगढ़ की विधायक श्रीमती शेष राज हरबंस, चंद्रपुर के विधायक रामकुमार यादव, छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल, जिला भाजपा के उपाध्यक्ष अमर सुल्तानिया,भारत स्काउट गाइड जिला मुख्य आयुक्त जांजगीर चांपा हितेश यादव, भाजपा नेता इंजीनियर रवि पांडेय, नगर पालिका जांजगीर के पूर्व अध्यक्ष रमेश पैंगवार, नगर पालिका जांजगीर के अध्यक्ष भगवान दास गढ़वाल,उपाध्यक्ष आशुतोष गोस्वामी, नगर पालिका चांपा के पूर्व अध्यक्ष राजेश अग्रवाल, यूनियन की जांजगीर चांपा जिला इकाई के अध्यक्ष राजू शर्मा, जिला महिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष श्रीमती सीमा शर्मा, केदार सिंह राठौर,राजेंद्र राठौर, जिला महासचिव राघवेंद्र पाठक,अमरीश राठौर, सहित अन्य दिग्गज हस्तियां उपस्थित थी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए जिला इकाई जांजगीर चांपा की ओर से केदार सिंह राठौर ने विस्तार पूर्वक पत्रकार सम्मेलन के विषय पर प्रकाश डाला साथ ही आगंतुक सभी पत्रकार साथियों का स्वागत किया,मंच पर उपस्थित अतिथियों का भी स्वागत यूनियन की ओर से किया गया।

www.vishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@yahoo.com

दैनिक
# विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 12 दिसंबर 2024



## संक्षिप्त समाचार

### कलेक्टर ने जनदर्शन में सुनी आम नागरिकों की समस्याएं

**गरियाबंद(विश्व परिवार)।** कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने आज जनदर्शन में जिले के अलग-अलग क्षेत्र से आये लोगों की मांग, समस्याएं एवं शिकायतें सुनी। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने आज जनदर्शन में 77 लोगों की समस्याओं को ध्यान से सुना और संबंधित अधिकारियों को आवेदनों का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। जनदर्शन में बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया और अपनी समस्याएं, जैसे भूमि विवाद, राशन कार्ड, पेंशन, पीएम आवास, वनअधिकार पट्टा एवं अन्य विषयों से जुड़े आवेदन प्रस्तुत किए। संबंधित विभागों को निर्देश देते हुए कलेक्टर ने कहा कि सभी प्रकरणों का निष्पक्ष और समयबद्ध समाधान किया जाए, ताकि आमजन को उनकी समस्या एवं शिकायतों का निराकरण हो सके। जनदर्शन में ग्राम कोपरा के तुलेश्वर ने अन्तरजातीय विवाह अनुदान हेतु , ग्राम पाण्डुका की मोंगरा बाई पटेल ने पी.एम. आवास दिलाने, ग्राम तर्रा की रुखमड़ी बंजारे ने आवास की राशि दिलाने, ग्राम मजरकट्टा के देवलाल ने जाति प्रमाण पत्र, ग्राम हिराबतर के पिरीथ राम ने ट्रायसकल प्रदाय करने, ग्राम मैनपुर खुर्द के रुदेशवर साहू ने बिजली बिल में सुधार करने व मीटर लगाने,ग्राम सड़कपरसूली की केशरी बाई यादव ने दूसरे के बैंक में पैसा जाने हेतु, ग्राम साजापाली के मोहन पटेल ने पट्टा प्रदाय करने, ग्राम बिजली के रविकुमार साहू ने जमीन की सीमांकन कराने, ग्राम मुरमुरा अशोक कुमार यादव ने मुरमुरा बीट में अग्निसुरक्षा रखने, ग्राम हरदी के दशरथ ने नेशनल पेन्सन सिस्टम सर्विसिज लिमिटेड के संबंध में आवेदन प्रस्तुत किया।

### पदमा के लिए वरदान बनी महतारी वंदन योजना

**जगदलपुर(विश्व परिवार)।** राज्य सरकार की नवीनतम महतारी वंदन योजना महिलाओं के लिए घर-परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयोगी साबित हो रही है। विकासखण्ड तोकापाल अंतर्गत एरण्डवाल निवासी एकल महिला पदमा कच्छ इस योजना की सहायता को स्वयं के लिए वरदान मानकर सरकार को धन्यवाद देती हैं। पदमा राज्य सरकार की इस योजना की सहायता मिलने से भावुक होकर कहती हैं कि पति के गुजरने के बाद उसे अपने भरण-पोषण के लिए केवल विधवा पेंशन ही सहारा था लेकिन अब उक्त योजना की मदद उसे जीवन में एक नई आस जगा दी है। पदमा ने बताया कि उसे सरकार की ओर से निराश्रित लोगों के लिए प्रावधानित अंत्योदय राशन कार्ड से हर महीने 10 किलोग्राम नि:शुल्क चावल भी मिल रहा है। जिससे जीवन-यापन में बहुत सहूलियत हो रही है। उसने कहा कि महतारी वंदन योजना से मिलने वाली सहायता राशि का उपयोग घरेलू जरूरत को पूरा करने के साथ थोड़ी राशि बचत कर रही हैं ताकि आड़े वक्त में काम आ सके। ज्ञात हो कि प्रदेश में महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन सहित उनके स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सतत सुधार तथा परिवार में उनकी निर्णायक भूमिका सुदृढ़ करने और समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव, असमानता को दूर करने एवं जागरूकता लाने, स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सुधार करने तथा आर्थिक स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में महतारी वंदन योजना लागू किए जाने का निर्णय लिया गया है।

### प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महाविद्यालय में एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन

**रामानुजगंज(विश्व परिवार)।** शासकीय लरंगसाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामानुजगंज में प्रतियोगी परीक्षा व सीजीपीएससी के लिए छात्रहित को ध्यान में रखते हुए करियर मार्गदर्शन पर एक दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों द्वारा अपने करियर से संबन्धित समस्याओं पर मार्गदर्शन प्राप्त किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता छ. ग. राज्य सिविल सेवा परीक्षा 2024 में राज्य कर निरिक्षक पद पर चयनीत पंकज कुमार यादव के द्वारा महत्वपूर्ण बिन्दुओं जैसे-लक्ष्य निर्धारण, छ.ग. पीएससी प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा पाठ्यक्रम, तैयारी कब व कैसे करें। तैयारी के दौरान विषम परिस्थितियों का सामना कैसे करें, पर मार्गदर्शन दिया गया, साथ ही अपने तैयारी के दिनों व तीन बार इंटरव्यू तक पहुंच कर सफलता प्राप्त करने तक का अनुभव साझा कर विद्यार्थीयों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर कुछ कर दिखाने का जुनुन पैदा किया गया। इस एक दिवसीय कार्यशाला में महाविद्यालय के वरिष्ठ सहा. प्राध्यापक डॉ आर बी सोनवानी, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रभारी प्राचार्य सहा प्राध्यापक शनि कुमार धारी, रासेयो के कार्यक्रम अधिकारी सहा प्राध्यापक रमेश कुमार खैरवार , प्रभारी सहा. प्राध्यापक योगेश कुमार एवं अतिथि व्याख्याताओं द्वारा विद्यार्थीयों के करियर संबंधित विभिन्न क्षेत्रों पर अपना मार्गदर्शन दिया गया ।

# पांच सदस्यों की जांच टीम कलेक्टर द्वारा गठन की गई थी

### जांच टीम के समक्ष छात्राओं पुनः रो रोकर सुनाई अपनी आपबीती

**गरियाबंद ( विश्व परिवार )।** शासकीय उच्चतर हायर सेकेंडरी विद्यालय मैनपुर में बहुचर्चित दो गुटों की लड़ाई की जांच के लिए जिलाधीश गरियाबंद के द्वारा पांच सदस्यों की जांच टीम गठित किया गया था जिसमें सदस्यो मे कृपाल सिंह पर सहायक संचालक जिला गरियाबंद श्रीमती ए के लकड़ा प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सड़क परसुली श्रीमती तृप्ति शानीग प्राचार्य शासकीय हाई स्कूल छिंदौला वाय आर साहू प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पांडुका बंटी राय प्राचार्य शासकीय हाई स्कूल कुरुभांठा ने मैनपुर पहुंचकर छात्रों व शिक्षकों से बारी बारी से पूरी पूछताज किया गया जांच की निष्कर्ष सामने तो नहीं आया है लेकिन खबर की असर में जांच टीम पहुंचे थे। साथ में जिला शिक्षा अधिकारी आनंद शाश्वत, एसडीएम मैनपुर पंकज डाहरे , एसडीओपी मैनपुर बाजीराव सिंह, श्याम चंद्राकर , महेश पटेल विकास खंड शिक्षा अधिकारी, बी आर सी सी शिव कुमार नागे तहसीलदार गैंदलाल साहू थाना प्रभारी शिव शंकर हुर्रा संजय नेताम जिला पंचायत उपाध्यक्ष लोकेश्वरी नेताम जिला पंचायत सदस्य दुलार सिन्हा मंडल अध्यक्ष रामकृष्ण ध्रुव ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष तुलसी राठौर गजेन्द्र यादव गोलू पटेल नंदकिशोर चौबे मुकेश सिन्हा सहित जनप्रतिनिधि गण भी उपस्थित रहे। टीम के द्वारा जांच जारी किया गया है उसके बाद भी जांच टीम के समक्ष छात्राओं की सिसक सिसक कर रोना अब तक शांत नहीं हुआ है वहीं शाला प्रबंधन समिति के द्वारा भी बैठक आयोजित किया गया था। जिसमें सभी पालक गण उपस्थित रहे और सहमति जताई कि विवादित टीचरों को तत्काल ही शासकीय उच्चतर विद्यालय मैनपुर से हटाया जाए तभी छात्रों की दो गुटों की लड़ाई शांत होगी अन्यथा लड़ाई शांत होने की संभावना नहीं बन रही है। देखना अब यह है कि जांच टीम के द्वारा क्या कार्रवाई की जाती है बेड टच करने वाले शिक्षक पर क्या गाज गिर सकता है या फिर लीपापोती कर मामले को छोड़ दिया जायेगा यह जांच के बाद ही पता चलेगा लेकिन पालकों की मांग है कि विवादित लोगों को इस स्कूल से तत्काल ही हटाया जाए। नहीं हटाए जाने पर विवाद की स्थिति ऐसी ही बनी रहेगी और विद्यार्थी तनाव में रहेंगे क्योंकि उनकी परीक्षा नजदीक हैद्य जिला शिक्षा अधिकारी के द्वारा शिकायत मे शामिल टीचर को ही प्राचार्य नियुक्त किया गया है यह न्याय संगत नहीं होने की चर्चा भी बना रहा इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी आनंद शाश्वत से चर्चा करने पर कोई जवाब नहीं दिए। उचित जवाब नहीं दिए जाने के कारण अभिभावक आक्रोषित है

पांच सदस्यों की जांच कमेटी बनाई गई है उसमें बच्चों और शिक्षकों की बयान लिया गया है उसमें निष्कर्ष निकालकर जांच रिपोर्ट बनाई जाएगी द्य और दोषी शिक्षकों पर कार्यवाही की जाएगी सबका बयान दर्ज कर लिया गया हैं

**आनंद शास्वत**
**जिला शिक्षा अधिकारी गरियाबंद**

पालकों की ओर से यह प्रस्ताव किया गया है कि जो भी दोषी है उन कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए और विवादित शिक्षकों को हटाया जाए।

**योगेश शर्मा पालक**

यहां शिक्षकों की ही लड़ाई हो रही है बाहरी लोगों की कोई दखल अंदाज़ी नहीं है शिक्षकों के कारण ही राजनीति हो रही है

**ललित डहाटे पालक**

परीक्षा सिर पर है ऐसे में बेटियों की भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए निष्पक्ष जांच करते हुए दोषियों पर नियमानुसार कार्यवाही की जावे शैक्षणिक माहौल बेहतर बनाने हेतु समुचित निर्णय लेना बेहतर होगा

**हनीफमेमन जिला इंचार्ज आम आदमी पार्टी**

शिक्षकीय जगत को कलंकित करने वाले शिक्षकों पर कार्यवाही होनी चाहिए यदि जांच में शिक्षक दोषी है तो उन पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही होनी चाहिए द्य

**यशवंत बघेल टीचर एसोसिएशन छत्तीसगढ़ प्रांतीय सचिव**

# पंचायतों में कचरा प्रबंधन करें, नहीं तो होगी कार्रवाई : कलेक्टर

**बीजापुर(विश्व परिवार)।** सोमवार को जिला कार्यालय के इंद्रावती सभागार में कलेक्टर संबित मिश्रा ने पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की समीक्षा बैठक ली। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण में पूर्ण आवासों की संख्या एवं स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण योजनांतर्गत सामुदायिक शौचालय निर्माण में अपेक्षित प्रगति नहीं आने के कारण विकासखंड समन्वयक को कारण बताओं सूचना पत्र जारी करने के निर्देश दिए। जिन ग्राम पंचायतों में सेग्रीगेशन शेड का निर्माण पूर्ण हैं, उन ग्राम पंचायतों में कचरा कलेक्शन करने को कहा, नहीं होने की दशा में संबंधितों पर कार्रवाई करने की चेतावनी दी। अप्रारंभ आंगनबाड़ी भवन, पीडीएस गोदाम, पंचायत भवन सहित अन्य योजना में स्वीकृत निमाण कार्यों को शुरू करने के सख्त निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने मनरेगा योजनान्तर्गत लक्ष्य अनुरूप मानव दिवस सृजन करने के साथ ही निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का ध्यान रखने को कहा। कृषि से संबंधित कार्यों में 60 प्रतिशत से अधिक व्यय, एरिया आफिसर मानिटिरिंग विजिट, समयबद्ध, मजदूरी भुगतान में प्रगति लाने के निर्देश दिए। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन योजनांतर्गत समूह गठन में प्रगति लाने लगातार मॉनिटरिंग करने को कहा। स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत सामुदायिक शौचालयों, सेग्रीगेशन शेड और व्यक्तिगत शौचालय निर्माण कार्य की प्रगति पर असंतोष जाहिर करते हुए ब्लाक समन्वयक को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन हेतु स्वच्छताग्राही के माध्यम से डोर टू डोर कचरा संकलन कराने निर्देश देने के साथ ही ग्राम पंचायतों में स्वच्छता शुल्क राशि एकत्रित करने कार्यवाही किये जाने को कहा। तद्उपरांत कचरा कलेक्शन नहीं होने की स्थिति में संबंधित ग्राम पंचायत सचिव पर कार्रवाई निर्देशित किया। बैठक के अंत में सभी योजना के जिला प्रभारी अधिकारी एवं ब्लाक स्तर में कार्य करने वाले अधिकारी-कर्मचारियों को सभी मापदंड में प्रगति नहीं आने की स्थिति में कार्रवाई करने की चेतावनी दी।

# प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना : न्यौता भोजन से जिले के ढाई लाख से अधिक बच्चे लाभान्वित

**धमतरी(विश्व परिवार)।** प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजनान्तर्गत सभी शासकीय एवं अनुदान प्राप्त प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में न्योता भोजन का आयोजन किया जाता है। जिले में 16 फरवरी 2024 से न्योता भोजन लागू किया गया है। इसके तहत अब तक जिले के चारों विकासखण्डों के 4 हजार 778 स्कूलों के दो लाख 59 हजार 126 बच्चे लाभान्वित हुए हैं। यह विभिन्न त्यौहारों, अवसरों जैसे वर्षगांठ, जन्मदिन, विवाह और राष्ट्रीय पर्व आदि पर बड़ी संख्या में लोगों को भोजन प्रदान करने की भारतीय परम्परा पर आधारित है। इसी आधार पर प्रदेश में तिथि भोजन को न्योता भोजन के नाम से लागू किया गया है। समुदाय के सदस्य ऐसे अवसरों, त्यौहारों पर अतिरिक्त खाद्य पदार्थ या पूर्ण भोजन के रूप में बच्चों को पौष्टिक और स्वादिष्ट भोजन प्रदाय कर सकते हैं। यह पूरी तरह स्वेच्छिक है और समुदाय के लोग अथवा कोई भी सामाजिक संगठन या तो पूर्ण भोजन का योगदान कर सकते हैं या अतिरिक्त पूरक पोषण के रूप में मिठाई, नमकीन, फ्ल या अंकुरित अनाज आदि के रूप में खाद्य सामग्री का योगदान कर सकते हैं। बता दें कि न्योता भोजन स्कूलों में दिए जाने वाले भोजन का विकल्प नहीं है, बल्कि यह केवल स्कूल में प्रदाय किए जाने वाले भोजन का पूरक है। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने योजना की सराहना करते हुए इस दिशा में जनसमुदाय में व्यापक प्रचार-प्रसार कर अधिक से अधिक स्कूलों में न्योता भोजन आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करने कहा, ताकि प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना से लाभान्वित हो रहे बच्चों को अतिरिक्त खाद्य पदार्थ या पूर्ण भोजन के रूप में पौष्टिक और स्वादिष्ट भोजन प्रदाय किया जा सके। योजना के तहत सभी जनप्रतिनिधि, पंचायत अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सदस्यगण, अधिकारी, कर्मचारी, गणमान्य नागरिक, बच्चों के पालक, ग्रामीणजन को भी नजदीक के स्कूलों में न्योता भोजन कर सकते हैं।

### माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में नियद नेल्लानार योजना से पहुंच रही विकास की किरणें

**सुकमा(विश्व परिवार)।** माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में विकास और जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा नियद नेल्लानार योजना को सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में इस योजना का मुख्य उद्देश्य सुरक्षा कैंपों के पांच किलोमीटर की परिधि में बसे गांवों में केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ पहुंचाना है। नियद नेल्लानार योजना ने माओवाद प्रभावित इन गांवों में विकास की किरणें पहुंचा रही है और ग्रामीणों के जीवन में सुरक्षा, सुविधा और खुशहाली का नया अध्याय जोड़ा है। जिले में इस योजना के अंतर्गत 09 सुरक्षा कैंपों के दायरे में स्थित गांवों में 17 विभागों के सहयोग से 52 हितग्राही मूलक और 31 जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीणों को दिया जा रहा है। यह पहल माओवाद क्षेत्रों विकास को गति देने के साथ ही ग्रामीणों के जीवन स्तर में भी सुधार ला रही है। योजना के तहत ग्राम सिलगेर, टेकलगुड़ियम और पुवर्ती में छत्तीसगढ़ राज्य अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण (क्रेडा) विभाग द्वारा सोलर हाई मास्ट संयंत्र स्थापित किए जा रहे हैं। इन सोलर संयंत्रों के माध्यम से रात्रि के समय पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

# धारा 370, ट्रिपल तलाक, CC और राम मंदिर जैसे मुद्दे का समाधान करके मोदी जी ने सरदार साहब के सपने को साकार करने का काम किया है: अमित शाह

**नईदिल्ली।** राजस्थान के जोधपुर में सरदार वल्लभभाई पटेल की 11 फुट ऊँची प्रतिमा का अनावरण करते हुए केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अमित शाह ने देश की जनता को स्पष्ट संदेश दिया कि, 'सरदार साहब के जीवनकाल में शेष रह गए धारा 370 हटाना, यूनिफॉर्म सिविल कोड, भव्य राम मंदिर, ट्रिपल तलाक को समाप्त करना जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों को प्रधानमंत्री मोदी जी ने 10 वर्षों में पूरा करने का काम किया है।' 1,100 किलोग्राम और 11 फुट ऊँची सरदार पटेल की ये प्रतिमा कई

धातुओं से बनी है और इसे 8 फुट ऊँचे स्थान पर लगाया गया है, जिसकी सुगंध युगों-युगों तक फैलेगी। इतिहास गवाह है कि अखंड भारत के निर्माता सरदार पटेल के साथ देश और पूर्व की सरकारों ने कभी न्याय नहीं किया। दशकों तक एक ही परिवार की भक्ति में रची-बसी कांग्रेस पार्टी ने कभी सरदार पटेल का स्मारक तक नहीं बनने दिया, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के केवड़िया में दुनिया की सबसे ऊँची 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' बनाकर सरदार पटेल को सम्मानित करने का काम किया। अमृतकाल में सरदार पटेल को भारत रत्न भी मिला है और दुनिया का सबसे ऊँचा स्मारक भी आज सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम से है। सरदार पटेल एक ऐसे देश भक्त थे, जिन्होंने देश के सामने खड़ी विपदाओं को अपने ऊपर लेकर उनसे मुक्ति दिलाने का काम किया। सरदार पटेल न होते तो 556 से अधिक रियासतें एक न होतीं और आज भारत का नक्शा कुछ और होता। यह कौन नहीं जानता है कि गुजरात और राजस्थान की कई रियासतों को भारत के साथ जोड़ने का काम सरदार पटेल ने किया। महाराजा जोधपुर को समझाकर जोधपुर रियासत का भारत में विलय करने का काम भी सरदार पटेल ने ही किया।

# प्रधानमंत्री आवास योजना के प्रगतिरत कार्य को करें जल्द पूर्ण : कलेक्टर हरिस

**जगदलपुर(विश्व परिवार)।** कलेक्टर हरिस एस ने नियद नेल्लानार सर्वे रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए नियद नेल्लानार के अन्तर्गत 36 योजनाओं के लाभान्वित या हितग्राहियों की जानकारी पोर्टल पर एन्ट्री करवाने के निर्देश दिए। कलेक्टर हरिस मंगलवार को जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में समय सीमा की बैठक ली। कलेक्टर ने सर्वे कार्यों की जिला स्तर के अधिकारियों के दल द्वारा जांच करवाने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के प्रगतिरत कार्य को जल्द पूर्ण करवाने कहा और आवास योजना के आरआरसी के प्रकरणों के निराकरण के लिए सभी अनुविभागीय दंडाधिकारियों को संबंधित गांवों में शिविर के माध्यम से करने के निर्देश दिए। आवास योजनान्तर्गत वर्ष 2024-25 में प्रथम किश्त प्राप्त उपरांत की भौतिक प्रगति आवास के निर्माण में प्लिंथ, लिंटल स्तर पर पहुंचे कार्यों को प्राथमिकता से पूर्ण करवाएं, इस कार्य में आवास मित्रों के सहयोग से कार्य को गति

दें। कलेक्टर ने स्वच्छ भारत मिशन के तहत ओडीएफ प्लस, स्वीकृत, पूर्ण एवं प्रगतिरत कार्यो, सामुदायिक शौचालय निर्माण कार्य, सेग्रीगेशन शेड निर्माण कार्य की समीक्षा किए। मनरेगा कार्य में सप्ताहवार कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए सभी ब्लॉक में पांच-पांच हजार मजदूर निकालने के निर्देश का पालन करवाएं और रोजगार सहायकों से विशेष रूप से मस्टर रोल जारी करवाकर अधिक से अधिक मजदूरों का रोजगार दें। कलेक्टर ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजनांतर्ग नवीन पंजीयन के ब्लॉकवार प्रगति की समीक्षा किए और उद्यान, मत्स्यपालन विभाग, पशुपालन विभाग के अधिकारियों को किसान क्रेडिट कार्ड के तहत किसानों को ऋण उपलब्ध करवाने के लिए निर्देश दिए। बैठक में जाति प्रमाण पत्र निर्माण की साप्ताहिक प्रगति, निवास प्रमाण पत्र, मुख्यमंत्री स्कूल जतन योजना के कार्यों का थर्ड पार्टी वेरिफिकेशन के लिए अलग-अलग विभागों के दायित्व की जानकारी पर चर्चा किए। आयुष्मान कार्ड की निर्माण के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में बीस जगहों पर तथा नगर निगम में वार्डवार शिविर आयोजित करने हेतु कार्ययोजना बनाकर लागू करने के निर्देश दिए। बैठक में सिकलसेल रिपोर्ट, सघन मोतियाबिंद जांच एवं उपचार टीबी की जांच व उपचार की समीक्षा किए, साथ ही भवन विहीन उप स्वास्थ्य केन्द्र के निर्माण एजेंसीवार सहित कार्य की प्रगति की समीक्षा किए। इसके अलावा जल जीवन मिशन के प्रगतिरत कार्यों की समीक्षा किए। कलेक्टर ने विभिन्न विभागों के समय-सीमा के प्रकरणों पर चर्चा किए तथा आवश्यक कार्यवाही कर निराकरण के निर्देश दिए। उन्होंने मुख्यमंत्री जनदर्शन, पीजी पोर्टल की साप्ताहिक समीक्षा में लंबित प्रकरण को निराकरण के निर्देश दिए। बैठक में सीईओ जिला पंचायत प्रतिष्ठा ममगाई, अपर कलेक्टर सीपी बघेल सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित थे।

www.vishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@yahoo.com

दैनिक
# विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर गुरूवार 12 दिसंबर 2024



## व्यापार समाचार

### आईआईएफएल होम फाइनेंस लिमिटेड ट्रांच के जरिए 100 करोड़ तक जुटाएगा

**नई दिल्ली( एजेंसी )।** IIFL होम फाइनेंस ने 1,000 रुपए (प्रत्येक) की फेस वैल्यू के सिक्योर्ड, रेटेड, लिस्टेड रिडीमेबल नॉन-कन्वर्टिबल डिबेंचर (एनसीडी) के अपनेपब्लिक इश्यू का ऐलान किया है। जिसका बेस इश्यू साइज 100 करोड़ रुपए है, जिसमें 400 करोड़ रुपए तक के ओवर सब्सक्रिप्शन को बनाए रखने का विकल्प है, जो कुल मिलाकर 500 करोड़ रुपए तक है। वहीं यह 3000 करोड़ रुपए (ट्रेंच I इश्यू) की शेल्फ लिमिट के अंदर है। सेबी NCS रेगुलेशंस के कंप्लायंस में समय से पहले बंद होने के ऑप्शन के साथ ट्रेंच I इश्यू शुक्रवार यानी 6 दिसंबर 2024 को ओपन होगा और गुरुवार 19 दिसंबर 2024 को क्लोज होगा। NCDs को BSE और NSE (बीएसई के साथ एनएसई, स्टॉक एक्सचेंज) पर लिस्ट करने का प्रस्ताव है। एनएसई ट्रेंच I इश्यू के लिए नामित स्टॉक एक्सचेंज होगा। एनसीडी को क्रिसिल रेटिंग्स लिमिटेड द्वारा क्रिसिल एए/स्टेबल और इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च प्राइवेट लिमिटेडद्वारा आईएनडी एए/स्टेबल रेटिंग दी गई है। ट्रांच I इश्यू 8.85% प्रति वर्ष से लेकर 9.25% प्रति वर्ष तक के कूपन रेटके साथ सब्सक्रिप्शन के लिए एनसीडी की विभिन्न सीरीज प्रदान करताहै। ट्रांच द्व इश्यू के तहत एनसीडी को सीरीज I, II, III, IV, V, VI, VII, VIII और IX में मंथली और एनुअल कूपन पेमेंट ऑप्शन के साथ 24 महीने, 36 महीने, 60 महीने और 84 महीने की मैच्योरिटी/अवधि विकल्पों के साथ पेश कियाजा रहा है। निवेशकों की सभी कैटेगरी में एनसीडी होल्डर्स के लिएइफेक्टिव यील्ड (प्रति वर्ष) 8.85% प्रति वर्ष से 9.27% प्रति वर्ष तक है। ट्रांच I इश्यू की नेट प्रोसीड, ट्रांच I इश्यू से संबंधित व्यय को पूरा करने केबाद, कम से कम 75% का उपयोग आगे के ऋण देने, फाइनेंसिंग/ रीफाइनेंसिंग और कंपनी के मौजूदा उधारों के ब्याज और मूलधन कापुनर्भुगतान/पूर्व भुगतान के लिए किया जाएगा। 25% तक का इस्तेमालजनरल कॉर्पोरेट पर्पज के लिए होगा।

### यूटीआई फ्लेक्सी कैप फंड- व्यापार स्थिरता पर जोर देने वाला एक फ्लेक्सी-कैप पोर्टफोलियो, जो 1992 से संपत्ति बना रहा है

**नई दिल्ली( एजेंसी )।** एक यथार्थवादी वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करना किसी भी निवेशक के लिए सफल निवेश की दिशा में पहला कदम है. एक निवेश विकल्प की तलाश करते समय यह देखना महत्वपूर्ण है की वह क्या है जिससे आपको लगातार फायदा मिलता है. साथ ही, लंबी अवधि में बेहतर परिणाम से जुड़े जोखिम को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है. वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने के लिए म्यूचुअल फंड विकल्प अपनाया जा सकता है. परिसंपत्ति वर्ग में उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला से निवेश का चयन करते हुए लंबी अवधि में यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता है. यह एक म्युचुअल फंड उत्पाद श्रेणी है जिसे निवेशक लंबी अवधि के धन सृजन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निवेश कर सकते हैं. फ्लेक्सी-कैप फंड ओपन-एंडेड इक्विटी फंड हैं, जो कुल संपत्ति का कम से कम 65त्न विभिन्न बाजार पूंजीकरणों जैसे लार्ज-कैप, मिड-कैप या स्मॉल-कैप फंड में कंपनियों की इक्विटी संपत्ति में निवेश करता है। यूटीआई फ्लेक्सी कैप फंड श्रेणी के सबसे पुराने फंडों में से एक है (1992 में लॉन्च किया गया) और लगातार बेहतर प्रदर्शन का इसका दीर्घकालिक ट्रैक रिकॉर्ड है. इसके पास 26200 करोड़ का अभी कार्पस फंड है (30 नवंबर 2024 तक). यूटीआई म्युचुअल फंड की यह पेशकश किसी भी लंबी अवधि के निवेशक के लिए उपयुक्त है जो ऐसे फंड की तलाश में है जो निवेशकों के लिए आर्थिक मूल्य बनाने की क्षमता वाले व्यवसायों में निवेश करने का प्रयास करता है. यूटीआई फ्लेक्सी कैप फंड का निवेश दर्शन गुणवत्ता, विकास और मूल्यांकन के तीन स्तंभों पर बनाया गया है. पोर्टफोलियो रणनीति उन व्यवसायों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए होगी जो लंबी अवधि के लिए मजबूत विकास दिखाने की क्षमता रखते हैं और अनुभवी प्रबंधन द्वारा चलाए जा रहे हैं।

### कलर्स के फैंस के पसंदीदा शो 'मंगल लक्ष्मी', 'मेरा बलम थानेदार' और 'बिग बॉस 18' 16 दिसंबर से नए स्लॉट में मनोरंजन का डोज़ बढ़ाएंगे

**रायपुर।** अपनी मनोरंजक कहानियों से दर्शकों का दिल जीतने के बाद, कलर्स के सबसे लोकप्रिय शो एक नए समय पर दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने के लिए तैयार हैं! 16 दिसंबर से, बहुचर्चित पारिवारिक ड्रामा 'मंगल लक्ष्मी' रात 9:00 बजे प्रसारित होगा, जिसमें दर्शकों को एक घंटे का दमदार ड्रामा से भरा शोडाउन देखने को मिलेगा, इसके बाद रात 10:00 बजे रोमांस से भरपूर 'मेरा बलम थानेदार' प्रसारित होगा, और प्रशंसकों का पसंदीदा रियलिटी शो 'बिग बॉस 18' रात 10:30 बजे शुरू होगा। साथ में, ये शो ड्रामा, भावना और मनोरंजन के एक्स्ट्रा डोज़ का वादा करते हैं, जिससे दर्शक हर रात अपनी स्क्रीन से चिपके रहेंगे। समय में इस नए बदलाव के साथ, 'मंगल लक्ष्मी' हाई-स्टेक ड्रामा पेश करता है क्योंकि जिया (रुतुजा सावंत द्वारा अभिनीत) कार्तिक (शुभम दिक्षा द्वारा अभिनीत) पर छेड़छाड़ के झूठे आरोप लगाती है, जिससे वह सलाखों के पीछे पहुंच जाता है। लक्ष्मी(सानिका अमित द्वारा अभिनीत) कार्तिक को बेगुनाह साबित करने की कोशिश करती है, जिस दौरान उसकी प्यारी बहन मंगल (दीपिका सिंह द्वारा अभिनीत) हर कदम पर उसके साथ खड़ी रहती है। जबकि, 'मेरा बलम थानेदार' में, बुलबुल (श्रुति चौधरी द्वारा अभिनीत) वंश (सागर पारिख द्वारा अभिनीत) को सही रास्ते पर लाने की चुनौती को स्वीकार करती है, हालांकि वीर (शगुन पांडे द्वारा अभिनीत) वंश को अजमेर में हुई डकैती से जोड़ने वाले चौंकाने वाले सबूतों का खुलासा करता है। उत्साह को बढ़ाते हुए, 'बिग बॉस 18' में ड्रामा और भी बढ़ गया है जहां प्रतियोगी पावर के संघर्षों, अप्रत्याशित गठबंधन, और हैरान कर देने वाले सीक्रेट्स का सामना करते हैं। हर बीतते दिन के साथ, तनाव बढ़ता जाता है क्योंकि उन्हें मुश्किल चुनौतियों और अपने सबसे गहरे डरों का सामना करना पड़ता है, जिससे हर पल टीवी पर ज़रूर देखने योग्य बन जाता है। यह सीज़न शुरू से ही मज़ेदार और रोमांचक रहा है, साथ ही यह भावनाओं और सरप्राइज़ के उतार-चढ़ाव से भरा एक रोमांचक सफर होने का वादा करता है, जो 16 दिसंबर से दर्शकों को अपनी सीटों से बांधे रखेगा।

# एडिलेड में कमिंस अपने जश्न में अधिक आक्रामक थे: एडम गिलक्रिस्ट

**एडिलेड( एजेंसी )।** ऑस्ट्रेलिया के पूर्व विकेटकीपर एडम गिलक्रिस्ट ने एडिलेड ओवल में भारत के खिलाफ दूसरे टेस्ट में कप्तान पैट कमिंस की आक्रामकता की सराहना की, जिसमें मेजबान टीम ने 10 विकेट से जीत दर्ज कर सीरीज 1-1 से बराबर कर ली। गुलाबी गेंद के टेस्ट में, कमिंस, मिशेल स्टार्क और स्कॉट बोलैंड की ऑस्ट्रेलियाई तेज तिकड़ी ने भारत की पारी में सभी 20 विकेट चटकाए। कमिंस और स्टार्क ने सीम-फ्रेंडली सतह पर दबदबा दिखाया और दोनों ने मिलकर 15 विकेट साझा किए। पर्थ की 295 रन की हार में केवल तीन विकेट लेने वाले कमिंस ने एडिलेड में सात विकेट लिए और नियंत्रित आक्रामकता के साथ जश्न मनाया। फॉक्स क्रिकेट के द फॉलो-ऑन पॉडकास्ट पर गिलक्रिस्ट ने कहा, आप उनके जश्न से ही देख सकते हैं कि... उन्होंने जो भी विकेट लिया, उसका जश्न मनाने में वे अधिक आक्रामक थे। इस हद तक नहीं कि वे नियंत्रण खो बैठे, लेकिन आप यह स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि (पर्थ में) उनके प्रदर्शन के बाद उन्हें थोड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा था और वे आंतरिक रूप से पर्थ में जिस तरह से खेले, उससे बहुत निराश हुए होंगे। गिलक्रिस्ट ने कहा, तो यह (एडिलेड में जश्न) आपको दिखाता है कि यह उनके लिए क्या मायने रखता है और उन्हें पता था कि वे उस स्तर पर वापस आ गए हैं जिस पर वे अपना क्रिकेट खेलना चाहते हैं। कमिंस शानदार थे, वे ऐसे दिख रहे थे जैसे पर्थ के बाद उन्हें थोड़ा सा तेल और ग्रीस बदलने और ट्यून अप की ज़रूरत हो, वे मैच के अंत तक ठीक हो रहे थे, इसलिए यह देखना शानदार था। उन्होंने आगे कहा, वे सिर्फ़ एक इकाई थे, तीन गेंदबाज़, नाथन लियोन ने (मैच में) सिर्फ़ एक ओवर किया और मिच मार्श ने चार, लेकिन इसके अलावा, बड़े तीन - स्टार्क, बोल्ड, कमिंस - ने एक साथ शिकार किया और एक इकाई के रूप में गेंदबाज़ी की और यह देखना वाकई मज़ेदार था। इस बीच, गिलक्रिस्ट ने डिफेंस में मार्नस लाबुशेन के सकारात्मक दृष्टिकोण की प्रशंसा की, उन्होंने कहा कि हालांकि उनका आउट होना काफ़ी नरम था, लेकिन उनका मानना है कि लाबुशेन ने सीरीज़ के आगे बढ़ने के साथ और अधिक रन बनाने के लिए एक ठोस मंच तैयार किया है। गिलक्रिस्ट ने कहा, जब आप डिफेंस करते हैं तो यह आसान होता है; अगर आप तुरंत यह आंकलन करना चाहते हैं कि सिंगल है या नहीं, तो मैं गलत हो सकता हूं, लेकिन पर्थ में ऐसा लग रहा था कि वह डिफेंस में इतना मजबूत था कि आप उस एक्शन में इरादा खो देते हैं। इसके बाद आप एक त्वरित सिंगल लेने और खुद को स्ट्राइक से दूर रखने और फंसने से बचने का मौका चूक सकते हैं। उन्होंने (एडिलेड में) जो कुछ भी किया वह वास्तव में सकारात्मक था और ऐसा लग रहा था कि उनका इरादा सही था। वह अंत में जिस तरह से अपना विकेट गंवाते हैं, उससे बेहद निराश होते, जो काफी नरम तरीके से निकला। तथ्य यह है कि उन्होंने क्रीज पर कुछ समय बिताया, रन जुटाना शुरू किया और मैकस्वीनी के साथ वास्तव में महत्वपूर्ण साझेदारी की, मुझे लगता है कि इसने मार्नस को सही रास्ते पर वापस ला दिया है। अब, यह उनका काम है कि वे इसे बार-बार दोहराएं। ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच तीसरा टेस्ट 14 दिसंबर से ब्रिस्बेन में खेला जाएगा।

### ट्रेविस हेड का पूर्व कोच जस्टिन लैंगर के साथ मतभेद था : टिम पेन

**नई दिल्ली( एजेंसी )।** ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान टिम पेन ने खुलासा किया है कि स्टार बल्लेबाज ट्रेविस हेड और उनके पूर्व कोच जस्टिन लैंगर के बीच अक्सर रेड बॉल क्रिकेट खेलने के तरीके को लेकर मतभेद होते थे। पेन का मानना है कि जब से हेड को लैंगर के कार्यकाल के आखिरी समय में और बाद में नए कोच मैकडोनाल्ड और कमिंस के मार्गदर्शन में अपनी शैली से खेलने की आजादी मिली है, तब से वह टेस्ट क्रिकेट में बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं। पेन ने एसईएन ब्रेकफास्ट से कहा, मुझे नहीं लगता कि उन्हें यह बात कहने से कोई समस्या होगी, लेकिन हेड और लैंगर के विचारों में बड़ा अंतर था। लैंगर जैसे महान खिलाड़ी कोचिंग दे रहे थे, और उस समय उनके बल्लेबाजी कोच ग्रीम हिक थे, जिन्होंने 101 प्रथम श्रेणी शतक बनाए थे। हिक भी अपने सुझाव दे रहे थे। उन्होंने आगे कहा, वह हेड से उनकी डिफेंसिव तकनीक पर काम करने के लिए जोर दे रहे थे, लेकिन हेड का तरीका अलग था। उस समय वे एक युवा टेस्ट खिलाड़ी थे और टीम में अपनी जगह बनाए रखने के लिए हर किसी को खुश करने की कोशिश कर रहे थे। पेन ने कहा, आज हेड अपनी शैली पर भरोसा करते हैं और उसी के अनुसार खेलते हैं। कभी-कभी वे असफल होंगे, तो कभी उनका प्रदर्शन कमजोर रहेगा, लेकिन उनका आक्रामक अंदाज और मैच जीतने की कोशिश उन्हें खास बनाता है। अभी वे हर फॉर्मेट में शानदार खेल दिखा रहे हैं। ज्ञात हो कि हेड ने भारत के खिलाफ एडिलेड ओवल में शानदार प्रदर्शन करते हुए 140 रन बनाए। उनकी इस 141 रनों की पारी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने 337 का स्कोर खड़ा किया और गुलाबी गेंद के टेस्ट में 10 विकेट से बड़ी जीत दर्ज की थी। ट्रेविस हेड को इस पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड दिया गया था। पांच मैचों की बॉर्डर-गावस्कर सीरीज फिलहाल 1-1 से बराबर है। सीरीज का अगला टेस्ट 14 दिसंबर को गाबा में खेला जाएगा।

### 2025 में अफगानिस्तान के मुख्य कोच बने रहेंगे ट्रॉट

**नई दिल्ली( एजेंसी )।** अफ़ग़ानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) द्वारा एक साल तक कार्यकाल बढ़ाए जाने के चलते जोनाथन ट्रॉट 2025 के अंत तक अफ़ग़ानिस्तान के मुख्य कोच बने रहेंगे। उनका अगला दौरा ज़िम्बाब्वे का होगा लेकिन निजी कारणों के चलते वह सिर्फ़ वनडे प्रारूप के लिए ही उपलब्ध रह पाएंगे। उनकी अनुपस्थिति में हामिद हसन मुख्य कोच और नवरोज़ मंगल सहायक कोच की भूमिका में दिखेंगे। एसीबी ने 2024 में टीम की सफलता को देखते हुए ट्रॉट का कार्यकाल बढ़ाया है। इस साल अफ़ग़ानिस्तान ने ग्रुप और सुपर 8 स्टेज में न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया को मात देते हुए टी20 वर्ल्ड कप के सेमीफ़ाइनल में अपनी जगह बनाई। इसके बाद उन्होंने शारजाह में दक्षिण अफ़्रीका और बांग्लादेश दोनों को ही वनडे सीरीज़ में पटखनी भी दी है। जबकि पिछले वर्ष अफ़ग़ानिस्तान ने वनडे वर्ल्ड कप में पाकिस्तान, इंग्लैंड और श्रीलंका जैसी टीमों को शिकस्त दी थी। अफ़ग़ानिस्तान अगले साल होने वाली चैंपियंस ट्रॉफ़ी में पहली बार हिस्सा लेगा। वनडे वर्ल्ड कप की अंक तालिका में शीर्ष आठ में रहने के कारण उन्हें इस टूर्नामेंट में प्रवेश मिला। ट्रॉट का कार्यकाल जुलाई 2022 में चालू हुआ था और जनवरी 2024 में उनका 18 महीने का अनुबंध बढ़ा दिया गया था।

**छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, विद्युत संभाग, - रायपुर, सेक्टर - 19, पर्यावास भवन, नवा रायपुर अटल नगर (छ.ग.)**

**द्वितीय निविदा आमंत्रण सूचना**

**विज्ञापन क्र. 66**

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, विद्युत संभाग - रायपुर अंतर्गत छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल के आवासीय कॉलोनी सेक्टर - 27 एवं सेक्टर - 29 नवा रायपुर अटल नगर में निर्मित आवासीय कॉलोनी के प्रकोष्ठ भवनों में लगे तड़ित चालक एंव कॉमन एरिया लाईटिंग का रख - रखाव कार्य हेतु निविदा एकीकृत पंजीयन प्रणाली में पंजीकृत सक्षम श्रेणी के ठेकेदार से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। विस्तृत निविदा आमंत्रण सूचना http://eproc.cgstate.gov.in/ तथा मण्डल वेबसाईट http://cghb.gov.in में उपलब्ध है। अन्य जानकारी हेतु कार्यपालन अभियंता (वि.) छ.ग.गृ. नि.मं. विद्युत संभाग - रायपुर के मो. नं. 94255-52266 पर संपर्क कर सकते है।

**कार्यपालन अभियंता ( वि. )**

SAMVAD- 42391/ 3

**कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)**
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./16364/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र. 16364**
**वार्ड का नाम-47-सिविल लाईन वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 47 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR342E00174** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **S.R. DESHMUKH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHIKARI RAM** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **नरेन्द्र कुमा देशमुख** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. समलिया राम देशमुख** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पारिवारिक सहमति** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

**( जोन कमिश्नर )**
**जोन क्रमांक-4**
**नगर पालिक निगम, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय कार्यपालन अभियंता, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड कांकेर जिला उत्तर बस्तर कांकेर छ.ग.**

**-:: ई-प्रोक्योरमेंट निविदा आमंत्रण सूचना ::-**

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत पंजीकृत सक्षम ठेकेदारों से निम्नांकित कार्य हेतु प्रपत्र "ए" में निविदा आमंत्रित की जाती है।

**कार्य का नाम :- कांकेर जिले के निम्नांकित ग्रामों में जल जीवन मिशन अंतर्गत सिंगल विलेज एवं सोलर से जल प्रदाय योजना निर्माण कार्य ।**

| क्र. | निविदा क्रमांक / सिस्टम टेन्डर क्रमांक | योजना का नाम | विकासखण्ड | अनुमानित लागत |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 910/162450 | चिखली | अंतागढ़ | 48.75 |
| 2 | 911/162454 | नवागांव (दमकसा) | दुर्गूकोंदल | 11.47 |

निविदा की समान्य शर्ते एवं विस्तृत विवरण तथा अन्य जानकारी वेबसाईट https://eproc.cgstate.gov.in पर दर्शित है। उपरोक्त सम्पूर्ण निविदाओं की निविदा तिथि 05.12.2024 है तथा उक्त निविदाओं को दिनांक 06.12.2024 से 26.12.2024 तक भरी जा सकती है।

**कार्यपालन अभियंता**
**लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड कांकेर**
**जिला उत्तर बस्तर कांकेर (छ.ग.)**

G- 242504466/1

**कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)**
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

**-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-**
**नामांतरण प्रकरण क्र. 600 दिनांक 11.12.2024**
**वार्ड का नाम- छत्रपति शिवाजी वार्ड**
**वार्ड क्र. 15 वर्ष- 2024-25**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 15 मांग **पंजी क्र. 199 युआईडी 18926** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **पीतांबर धीवर / खम्हन धीवर** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **हेमंत धीवर / पीताम्बर धीवर** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **10-01-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**राजस्व अधिकारी**
**नगर पालिक निगम, बीरगांव**
**जिला-रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)**
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16351/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 11-12-2024

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र. 16351**
**वार्ड का नाम- 05 - बंजारी माता मंदिर वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 05 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105D00358** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SUSHILA DUBEY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SUKHDEV** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **KISHOR KUMAR DUBEY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SUKDEV PRASAD DUBEY** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

**श्री हितेन्द्र यादव**
**( जोन कमिश्नर )**
**जोन क्रमांक- ( 1 )**
**नगर पालिक निगम, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)**
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./16422/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 10-12-2024

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र. 16422**
**वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR235I00057** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **NEETA MEGHNANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O BHAGWAN DAS** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री निखिल मेघनानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता - स्व. श्री भगवानदास मेघनानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें

**श्री आर.के. डोंगरे**
**( जोन कमिश्नर )**
**जोन क्रमांक- ( 2 )**
**नगर पालिक निगम, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)**
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./16437/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 11-12-2024

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र. 16437**
**वार्ड का नाम- 36- हवलदार अब्दुल हमीद वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 36 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR436J00151** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **AAMNA BAI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O LT. TAHIR KHAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SITARAM BEGAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O MAKHDUM ALI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें

**श्री आर.के. डोंगरे**
**( जोन कमिश्नर )**
**जोन क्रमांक- ( 2 )**
**नगर पालिक निगम, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)**
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./16425/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 10-12-2024

**इश्तिहार**

**नामांतरण प्र.क्र. 16425**
**वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR235I00053** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **BHAGWAN DAS S/O CHATUMAL MEGHNANI , NEETA MEGHNANI W/O BHAGWAN DAS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **....** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री निखिल मेघनानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता - स्व. श्री भगवानदास मेघनानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें

**श्री आर.के. डोंगरे**
**( जोन कमिश्नर )**
**जोन क्रमांक- ( 2 )**
**नगर पालिक निगम, रायपुर ( छ.ग. )**

**कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)**
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

**-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-**
**नामांतरण प्रकरण क्र. 599 दिनांक 11.12.2024**
**वार्ड का नाम- छत्रपति शिवाजी वार्ड**
**वार्ड क्र. 15 वर्ष- 2024-25**

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 15 मांग **पंजी क्र. 145 युआईडी 18872** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **बुधराम सतनामी / बिसौहा** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **बलीचन्द बंजारे / स्व. बुधराम बंजारे** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **10-01-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**राजस्व अधिकारी**
**नगर पालिक निगम, बीरगांव**
**जिला-रायपुर ( छ.ग. )**

दैनिक
# विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 12 दिसम्बर 2024

**मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर जनता के नाम देंगे संदेश**

**रायपुर (विश्व परिवार)।** मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर 12 दिसंबर को राज्य की जनता के नाम संदेश देंगे, जिसका प्रसारण अपराह्न 4 बजे एवं रात्रि 8 बजे क्षेत्रीय समाचार चैनलों, आकाशवाणी, एफएम रेडियो एवं सीएमओ के सोशल मीडिया प्लेटफार्म से किया जाएगा।



## संक्षिप्त समाचार

### उरला इंडस्ट्रीज़ एसोसिएशन के अध्यक्ष अश्विन गर्ग का दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (DRUCC) की सलाहकार समिति में मनोनयन

**रायपुर (विश्व परिवार)।** उरला इंडस्ट्रीज़ एसोसिएशन के अध्यक्ष अश्विन गर्ग जी का मनोनयन दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (DRUCC) की सलाहकार समिति में महाप्रबंधक द्वारा किया गया है। इनका कार्यकाल 16/8/2024 से 15/8/2026 दो वर्ष के लिए रहेगा। पूर्व में भी श्री गर्ग उरला इंडस्ट्रीज एसोसिएशन का प्रतिनिधित्व (DRUCC) की सलाहकार समिति कर चुके है ।

### रायपुर प्रेस क्लब में 105 पत्रकारों व परिजनों ने बनवाया आयुष्मान कार्ड

**रायपुर (विश्व परिवार)।** रायपुर प्रेस क्लब में बुधवार को पत्रकार सदस्यों एवं उनके परिजनों के लिए आयुष्मान कार्ड बनाने शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में 105 पत्रकारों और उनके परिजनों ने आयुष्मान कार्ड बनवाया। प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर ने बताया कि हमारा ध्येय पत्रकार साथियों के साथ परिजनों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना है। इसी कड़ी में हमारे द्वारा नियमित रूप से शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। बीते दिनों ड्राइविंग लायसेंस बनवाने तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसका 350 से अधिक लोगों ने लाभ उठाया। आयुष्मान कार्ड शिविर के लिए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी रायपुर और उनकी टीम का भरपूर सहयोग मिला। शिविर में स्वास्थ्य मितान कुणाल चंद्राकर, अजय जांगड़े, नीरू नागपुरे, संतोषी जायसवाल ने आयुष्मान कार्ड बनाए। श्री ठाकुर शिविर के सफल आयोजन के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री ठाकुर ने कहा कि प्रेस क्लब सदस्यों और उनके परिजनों के लिए इस तरह की सुविधाओं के लिए भविष्य में और भी शिविर आयोजित किये जाते रहेंगे। प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर, महासचिव डॉ. वैभव शिव पांडेय, उपाध्यक्ष संदीप शुक्ला, कोषाध्यक्ष रमन हलवाई, संयुक्त सचिव तृप्ति सोनी और अरविंद सोनवानी ने शिविर में सहयोग के लिए सभी सदस्यों के प्रति भी आभार व्यक्त किया है।

### सीएम विष्णुदेव साय कोरबा जिले में 625.28 करोड़ के विभिन्न विकास कार्यों का करेंगे लोकार्पण-भूमिपूजन

**रायपुर (विश्व परिवार)।** मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय 12 दिसंबर को कोरबा प्रवास के दौरान जिलेवासियों को लगभग 625 करोड़ 28 लाख 56 हजार से अधिक लागत की 284 विभिन्न विकास कार्यों की सौगात देंगे। साथ ही 02 करोड़ 69 लाख 34 हजार की सामग्री का विभिन्न विभागों के 400 से अधिक हितग्राहियों को वितरण करेंगे। श्री साय विभिन्न विभागों के अंतर्गत किए जा रहे 284 विकास कार्यों का लोकार्पण, भूमिपूजन और शिलान्यास करेंगे। इन विकास कार्यों में 17 करोड़ 43 लाख 46 हजार से अधिक राशि के 34 कार्यों का लोकार्पण एवं 607 करोड़ 85 लाख 10 हजार से अधिक राशि की 250 कार्यों का भूमिपूजन-शिलान्यास शामिल हैं। कोरबा के सीएसईबी फुटबॉल ग्राउण्ड में दोपहर 12 बजे कार्यक्रम का आयोजन होगा। इस दौरान मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय कोरबा प्रवास के दौरान महिला बाल विकास विभाग द्वारा आयोजित मुख्यमंत्री कन्या विवाह कार्यक्रम में शामिल होकर दांपत्य जीवन में प्रवेश करने वाले 102 नव विवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देंगे।

# एमिटी विश्वविद्यालय में स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन का 7वां संस्करण शुरू

**रायपुर (विश्व परिवार)।** केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने एक वर्चुअल समारोह में स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन (एसआईएच) 2024 के 7वें संस्करण का उद्घाटन किया, जिसमें नवाचार के माध्यम से वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में भारत की बढ़ती भूमिका पर जोर दिया गया।

देश भर के 51 केंद्रों में प्रतिभागियों से बात करते हुए, प्रधान ने युवा नवोन्मेषकों को उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने और 3 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था को साकार करने की दिशा में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने एसआईएच को ज्ञान-संचालित अर्थव्यवस्था का एक मॉडल बताते हुए प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे सरकारों, उद्योगों और समाज के सामने आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों को हल करने के लिए साल भर खुद को समर्पित करें।

शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार ने आत्मनिर्भर भारत के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने में एसआईएच के महत्व पर भी प्रकाश डाला (Atmanirbhar Bharat). उन्होंने इस आयोजन को नवाचार, विचार और समस्या समाधान का उत्सव बताया, जो राष्ट्र निर्माण की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर एआईसीटीई के अध्यक्ष डॉ. टी.जी. सीतारामन, गोदरेज अप्लायंसेज में एवीपी और इनोवेशन के प्रमुख संत रंजन और शिक्षा मंत्रालय के सचिव संजय कुमार उपस्थित थे। उन्होंने प्रतिभागियों को अपनी रचनात्मकता को प्रभावशाली और टिकाऊ समाधानों की ओर ले जाने के लिए प्रेरित किया। एस. आई. एच. 2024 ग्रैंड फिनाले के लिए 51 नोडल केंद्रों में से एक एमिटी यूनिवर्सिटी छत्तीसगढ़ ने उत्साह और भव्यता के साथ कार्यक्रम की मेजबानी की।

मुख्य अतिथि टी. एन. सिंह, उप महानिदेशक और राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, छत्तीसगढ़ ने स्थानीय कार्यवाही का उद्घाटन किया। दर्शकों को संबोधित करते हुए, सिंह ने 2017 में अपनी स्थापना के बाद से हैकाथॉन के तेजी से विकास पर जोर दिया, इस वर्ष 7, 500 विचारों के साथ 7, 000 प्रतिभागियों से प्रभावशाली 54, 000 प्रस्तुतियों तक। उन्होंने प्रतिभागियों को सरकारी और निजी क्षेत्र की समस्याओं के बयानों द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों के लिए अभिनव समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

इस आयोजन में 31 टीमों ने भाग लिया, जिसमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पांडिचेरी, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, पश्चिम बंगाल, राजस्थान और अन्य राज्यों सहित पूरे भारत के 13 राज्यों के 186 छात्र (103 पुरुष और 83 महिलाएं) शामिल थे। 28 सलाहकारों द्वारा निर्देशित प्रतिभागियों ने पांच महत्वपूर्ण समस्या क्षेत्रों पर काम किया: स्वच्छ और हरित प्रौद्योगिकी, स्मार्ट शिक्षा, आपदा प्रबंधन, विरासत और संस्कृति, और स्वास्थ्य और खेल। उनके अभिनव समाधानों का मूल्यांकन 17 सम्मानित जूरी सदस्यों द्वारा किया गया, जिनमें शिक्षाविदों और उद्योग के विशेषज्ञ शामिल थे।

एन.आई.टी. रायपुर में प्रशिक्षण और नियोजन प्रमुख प्रोफेसर समीर बाजपेयी ने एस. आई. एच., इसकी संरचना और इसके उद्देश्यों पर एक विस्तृत ब्रीफिंग के साथ प्रतिभागियों को प्रेरित किया। उन्होंने छात्रों से सहयोग और तकनीकी विशेषज्ञता के महत्व पर जोर देते हुए रचनात्मकता और उत्साह के साथ चुनौतियों का सामना करने का आग्रह किया।

एमिटी यूनिवर्सिटी छत्तीसगढ़ के कुलपति प्रोफेसर पीयूष कांत पांडे ने एक प्रेरक भाषण दिया, जिसमें प्रतिभागियों से मानवता की कुछ सबसे महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान करने वाले प्रभावशाली विचारों का प्रस्ताव देने का आह्वान किया। उन्होंने अनुसंधान और नवाचार के लिए एमिटी की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला, यह देखते हुए कि कैसे एमिटी यूनिवर्स-जिसमें विश्वविद्यालयों और स्कूलों का एक विशाल नेटवर्क शामिल है-ने खुद को भारत के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में से एक के रूप में स्थापित किया है।

उन्होंने कहा कि मित्रता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और नवाचार की एक किरण के रूप में खड़ी है, जो अकादमिक उत्कृष्टता और सामाजिक प्रभाव की संस्कृति को बढ़ावा देती है। प्रोफेसर पांडे ने प्रतिभागियों से इस प्रक्रिया का आनंद लेने और ऐसे समाधान बनाने की दिशा में काम करने का आग्रह किया जो भविष्य को आकार दे सकें।

2017 में शुरू किया गया स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन दुनिया के सबसे बड़े खुले नवाचार मंचों में से एक के रूप में विकसित हुआ है, जो छात्रों को राष्ट्र के विकास में योगदान देते हुए वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से निपटने के अवसर प्रदान करता है। एक नोडल केंद्र के रूप में एमिटी विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की भूमिका नवाचार और समस्या-समाधान को बढ़ावा देने में इसके नेतृत्व को रेखांकित करती है, जिससे अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में इसकी प्रतिष्ठा और बढ़ जाती है।

## संरक्षा के सजग प्रहरियों को महाप्रबंधक, सुश्री नीनु इटियेरा ने सम्मानित किया

**रायपुर/बिलासपुर (विश्व परिवार)।** रेल परिचालन में संरक्षा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सजगता एवं बेहतर संरक्षा कार्य में सहभागिता निभाने वाले रेल संरक्षा के सजग प्रहरी कर्मचारियों का सम्मान महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के द्वारा हर माह आयोजित संरक्षा बैठक के दौरान किया जाता है। इसी कड़ी में आज दिनांक 11 दिसम्बर'2024 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में कार्यरत संरक्षा कोटि के 02 कर्मचारियो को उनके उत्कृष्ट एवं सराहनीय संरक्षा सबंधी कार्य निष्पादन के लिए महाप्रबंधक सुश्री नीनु इटियेरा के द्वारा सम्मानित किया गया।

रायपुर रेल मण्डल के पॉइंट्स मैन -'बी'/सिलियारी, श्री तेजराम धीवर ने दिनांक 04 अक्टूबर, 2024 को अपने ड्यूटि के दौरान सिलियारी-बैकुंठ सेक्शन में एक डाउन दिशा की ओर जाती हुई मालगाड़ी के ब्रेक वैन से 23 वें वैगन मे हॉट एक्सल का पता लगाया एवं सर्वसंबंधित को सूचित किया। तत्पश्चयात, ट्रेन को बैकुंठ रेलवे स्टेशन में नियंत्रित कर जाँच करने पर पाया गया कि हॉट एक्सल के कारण पहिये की बेयरिंग गर्म हो कर लाल हो गया था। जिसके उपरांत ट्रेन को नियमनुसार सुरक्षित कर आगे के लिय रवाना किया गया। इस प्रकार श्री तेजराम धीवर की सजगता एवं सतर्कता से ट्रेन परिचालन में संरक्षा सुनिश्चित हुई।

रायपुर रेल मण्डल के ट्रैक मेंटेनर ग्रेड-II /भाटापारा, श्री पुरुषोत्तम ध्रुव, दिनांक 04 नवम्बर, 2024 को जो कि लेवल क्रॉसिंग गेट संख्या-385 पर ड्यूटि के दौरान एक मालगाड़ी के इंजिन से 30 वें वैगन मे हॉट एक्सल को देखा एवं सर्वसंबंधित को सूचित किया। जिसके उपरांत ट्रेन को हथबंद स्टेशन पर रोक कर जाँच करने पर पाया गया कि हॉट एक्सल के कारण पहिये की बेयरिंग गर्म हो कर लाल हो गया था। तत्पश्चयात, ट्रेन को नियमनुसार सुरक्षित कर आगे के लिय रवाना किया गया। इस प्रकार श्री पुरुषोत्तम ध्रुव के द्वारा सजगता एवं सतर्कता से ट्रेन परिचालन में संरक्षा सुनिश्चित हुई। संरक्षा कोटि के कर्मचारी को सम्मानित किए जाने के अवसर पर अपर महाप्रबंधक, प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी अन्य विभागाध्यक्ष सहित अधिकारीगण उपस्थित थे।

## एएम/एनएस इंडिया की पहल 'बालज्योति' शिविरों में 800 से अधिक बच्चों के आंखों की हुई जांच

### एएम/एनएस इंडिया द्वारा दंतेवाड़ा में 'बालज्योति' नेत्र जांच शिविर, बच्चों को उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ाने का प्रयास

**दंतेवाड़ा (विश्व परिवार)।** आर्सेलर मित्तल निप्पॉन स्टील इंडिया कंपनी (एएम/एनएस) द्वारा सीएसआर पहल के तहत दंतेवाड़ा जिले में आयोजित 8 दिवसीय 'बालज्योति' नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर के चौथे दिन, पोंडुम और दंतेवाड़ा में 8 स्कूलों के कुल 353 बच्चों ने शिविर में भाग लिया।

इसके अलावा, आज मेलावाड़ा में आयोजित शिविर में कुल 523 बच्चों का नेत्र परीक्षण किया गया, जिसमें से 126 बच्चों में दृष्टि सुधार (रेफ्रैक्टिव एरर) आवश्यकता की पहचान की गई। इस दौरान, जीएम श्री राघवेलु ने शिविर का दौरा कर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि एएमएनएस के द्वारा ऐसे अनेक शिविर आयोजित किए जाएँगे जिसमें अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर विद्यार्थी इसका लाभ ले सकते हैं। आर्सेलर मित्तल निप्पॉन स्टील इंडिया कंपनी (एएम/एनएस) द्वारा आयोजित इस शिविर का मुख्य उद्देश्य बच्चों की दृष्टि संबंधी समस्याओं की पहचान करना और उनका समय पर समाधान सुनिश्चित करना है। यह पहल उन बच्चों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो अपनी नेत्र समस्याओं के कारण शिक्षा और सामान्य जीवन में कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

बालज्योति नेत्र जांच शिविर न केवल बच्चों की स्वास्थ्य समस्याओं को हल करने का प्रयास है, बल्कि यह शिक्षा के महत्व को भी उजागर करता है। स्पष्ट दृष्टि से बच्चों की पढ़ाई में सुधार होगा, जिससे उनकी शैक्षणिक प्रगति को बढ़ावा मिलेगा। यह पहल बच्चों को बेहतर दृष्टि के साथ आत्मविश्वास और संभावनाओं से भरे उज्जवल भविष्य की ओर ले जाने में सहायक होगी। यह शिविर बच्चों और उनके परिवारों के बीच नेत्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ स्थानीय समुदायों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को भी मजबूत करता है। शिविर के माध्यम से बच्चों की समय पर जांच और आवश्यक उपचार सुनिश्चित किया जा रहा है, ताकि कोई भी बच्चा दृष्टिहीनता या नेत्र संबंधी समस्याओं के कारण अपने सपनों और क्षमताओं से वंचित न हो। साथ ही यह एक सकारात्मक सामाजिक बदलाव का प्रतीक है, जो बच्चों को नई उम्मीद और संभावनाओं से भरा जीवन प्रदान करने में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगा।

## कृषि क्षेत्र में बढ़ती चुनौतियों का सामना करने हेतु डिजीटलीकरण आवश्यक

### कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ का तीन दिवसीय 32वां वार्षिक सम्मेलन प्रारंभ

**रायपुर (विश्व परिवार)।** इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर में आज कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ, नई दिल्ली का ''उच्च, सतत और समावेशी विकास के लिए कृषि का डिजीटलीकरण'' विषय पर तीन दिवसीय 32वां वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस सम्मेलन में देश भर के प्रमुख कृषि अर्थशास्त्री, नीति निर्माता एवं शोधकर्ता शामिल हुए। सम्मेलन में भारत में आगामी दो दशकों में कृषि क्षेत्र के सामने आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों पर विचार मंथन किया गया और घटते संसाधनों तथा बढ़ती हुई उत्पादन मांगों के युग में कृषि में डिजीटलीकरण को बढ़ावा देने तथा नवाचार एवं तकनीकी आधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने पर जोर दिया गया। सम्मेलन में विशेषज्ञों द्वारा कहा गया कि भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने तक देश को अपनी बढ़ती जनसंख्या की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अभूतपूर्व दबावों को सामना करना पड़ेगा। जल, जंगल और जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों तथा जैव विविधता पर बढ़ते दबाव और उत्पादन मांगों के तेजी से बढ़ने के पूर्वानुमान के साथ कृषि क्षेत्र को इस अंतर को स्थायी रूप से पाटने के लिए परिवर्तनकारी रणनीति अपनाना होगा। शुभारंभ समारोह के मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल थे तथा अध्यक्षता कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ के अध्यक्ष डॉ. पी.के. जोशी ने की।

**कृषि में घटते संसाधनों, बढ़ती खाद्यान्न मांग तथा जलवायु परिवर्तन पर कृषि अर्थशास्त्रियों ने जताई चिंता**

शुभारंभ समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. गिरीश चंदेल ने आने वाले समय में संसाधनों की घटती उपलब्धता, बढ़ती जनसंख्या के दबाव तथा जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने के लिए कृषि के क्षेत्र में डिजीटलीकरण को बढ़ावा देने तथा नवाचारी प्रयास किये जाने की आवश्यकता जताई। डॉ. चंदेल ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय में इस तरह के महत्वपूर्ण सम्मेलन का आयोजन यहां के शिक्षकों, वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस सम्मेलन में सार्थक चर्चा होगी तथा महत्वपूर्ण अनुशंसाएं प्राप्त होंगी। शुभारंभ समारोह के अध्यक्ष डॉ. पी.के जोशी ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में जिस तेजी से विज्ञान ने तरक्की की है और तकनीकी विकास के करण जीवन के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है, उस अनुपात में कृषि क्षेत्र में परिवर्तन दिखाई नहीं देते। हामरे पूर्वजों और हमारी पीढ़ी के बीच खेती करने के तौर तरीकों में ज्यादा अंतर देखने को नहीं मिलता। उन्होंने कृषि के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रौद्योगिकी विकास करने पर जोर दिया।

शुभारंभ समारोह को सम्मेलन को इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स के अध्यक्ष डॉ. डी.के. मरोठिया, सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. प्रताप एस. बिरथल, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, छत्तीसगढ़ डॉ. ज्ञानेन्द्र मणि, कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ के सचिव अंजनी कुमार, राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरौंडा, रायपुर के निदेशक डॉ. पी.के. घोष ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित एल्यूमिनी पोर्टल 'यूनी एल्यूमिनी' का लोकार्पण किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित नवीन प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया। समारोह में कृषि महाविद्यालय रायपुर के अधिष्ठाता डॉ. जी.के. दास, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के संचालक अनुसंधान डॉ. वी.के. त्रिपाठी भी उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. हुलास पाठक द्वारा किया गया।

## 55वें जीएसटी काउंसिल की बैठक के लिए चेंबर ने केन्द्रीय वित्तमंत्री को जीएसटी सरलीकरण के संबंध में भेजा सुझाव

**रायपुर (विश्व परिवार)।** छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेंद्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि 21 दिसम्बर 2024 को होने वाली 55वें जीएसटी काउंसिलिंग की बैठक में सुझाव देने हेतु चेंबर भवन में विभिन्न व्यापारिक-औद्योगिक संगठनों एवं पदाधिकारियों की बैठक संपन्न हुई थी। इसी तारतम्य में आज चेम्बर द्वारा जीएसटी सरलीकरण हेतु सुझाव के संबंध में माननीया केन्द्रीय वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन को जीएसटी सरलीकरण के संबंध में सुझाव भेजा गया।

चेंबर प्रदेश अध्यक्ष श्री पारवानी जी ने बताया कि 21 दिसम्बर 2024 को होने वाली 55वें जीएसटी काउन्सिल की बैठक में जीएसटी सरलीकरण हेतु सुझाव देने तथा प्रदेश के व्यापारियों में जीएसटी को लेकर आ रही परेशानियों के संबंध में चेंबर भवन में विभिन्न व्यापारिक-औद्योगिक संगठनों एवं पदाधिकारियों की बैठक रखी गई थी जिसमें जीएसटी सरलीकरण को लेकर विभिन्न सुझाव प्राप्त हुए जिसे प्रमुख रूप से चेंबर ने सुझावों को सूचीबद्ध किया।

प्रमुख सुझाव निम्नानुसार है- इनपुट टैक्स क्रेडिट जीएसटीआर 2बी के आधार मान्य होने सम्बन्धी प्रावधान को वापस लिए जाएं. यदि क्रेता द्वारा क्रय सम्बन्धी सभी दस्तावेज एवं भुगतान सम्बन्धी समस्त प्रमाण दिए जाए तो विभाग द्वारा विक्रेता पर ही कार्यवाही की जानी चाहिए. न्यूनतम दंड पर पुनर्विचार। धारा 126 का विस्तार कर धारा 73 को शामिल करना- छोटे व्यवसायों को अनजाने में हुई गलतियों से बचाना। धारा 149 का क्रियान्वयन: भरोसेमंद करदाताओं की पहचान करने के लिए जीएसटी अनुपालन रेटिंग का उपयोग करना। पंजीकृत करदाताओं (आरटीपी) का क्रॉस-ज्यूरिस्डिक्शन और पुनर्मूल्यांकन/ बहु-मूल्यांकन: पंजीकृत करदाताओं (आरटीपी) के कई आकलन: करदाताओं के लिए, जीएसटी आकलन को समझना जटिल हो सकता है। उन्हें विभिन्न प्राधिकरणों द्वारा शुरू किया जा सकता है। धारा 74 का खुला दुरुपयोग। राजस्व तटस्थ मामलों की पहचान: रिवर्स चार्ज मैकेनिज्म (आरसीएम)। नियम 42/43 के उल्लंघन के लिए मार्जिनलाइजिंग नोटिस जारी किया गया। ऐसा इनपुट टैक्स क्रेडिट, जो कि जीएसटीआर 2ए में नहीं दिख रहा है, उसके लिए एक प्रथम तीन वर्षों के लिए, व्यापारियों के लिए एक हितकारी योजना लाई थी। अत: आपसे अनुरोध है, कि समान योजना वित्तीय वर्ष 20-21 एवं वित्तीय वर्ष 21-22 (31.12.2021) तक के लिए भी लाए जानी चाहिए।

## महापौर एजाज ढेबर के नेतृत्व में कांग्रेस पार्षद दल ने कलेक्टर से की मुलाकात

**रायपुर (विश्व परिवार)।** कांग्रेस पार्षद दल का एक प्रतिनिधि मंडल महापौर एजाज ढेबर के नेतृत्व में आज कलेक्टर गौरव सिंह से मिला। महापौर एवं कांग्रेस पार्षदों ने कलेक्टर से शिकायत की कि प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 का फार्म नियमों के विपरीत जाकर भरवाया जा रहा है।

कांग्रेस पार्षद दल ने कलेक्टर से कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 का फार्म बेदर्दी से भरवाया जा रहा है। जिनके पास पट्टा नहीं, जिनकी तालाब या नहर के किनारे जमीन है ऐसे लोगों का भी फार्म भरवा दिया जा रहा है। नियम यह कहता है कि तालाब व नहर से लगी जमीन पर किसी भी तरह के निर्माण की अनुमति नहीं दी जा सकती। विधायक लोग तक अपात्र लोगों का फार्म भरवाने में लगे हुए हैं। जिनका पट्टा वैलिड है उन्हें आवास बनाने की अनुमति देने में कोई आपत्ति नहीं है। पार्षदों ने कहा कि जाति प्रमाण पत्र बनाने में भी रोड़े अटकाए जा रहे हैं। कांग्रेस पार्षदों ने यह भी कहा कि अमलीडीह में जमीन का प्रकरण गरमाया हुआ है। उल्टे आरोप यह लगाया जा रहा है कि अमलीडीह की जमीन कांग्रेस की सरकार ने दी थी। यदि कांग्रेस की सरकार ने दी भी तो कॉलेज बनाने के लिए दी थी न कि बिल्डर को। एकड़ों वाली जमीन अब बिल्डर को थमा दी गई है। 7 हजार वर्ग फुट तक की ही जमीन देने का अधिकार कलेक्टर के पास है। उससे अधिक जमीन का आबंटन 5 लोगों की कमेटी की बैठक में निर्णय लेने के बाद ही होता है। उस कमेटी में राजस्व मंत्री, राजस्व विभाग के सचिव तथा अन्य अधिकारी होते हैं।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354